Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत - सिंह
10.1
९७)

त सिंह

★

सर्वदानन्द

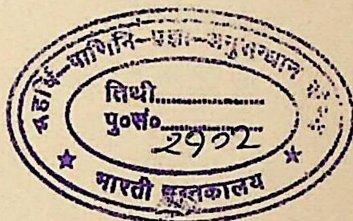
किताबमहल प्रकाशन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



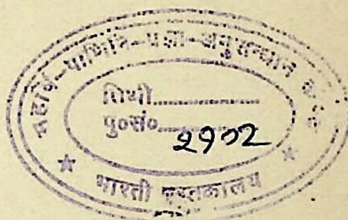
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह



•

सर्वदानन्द

किताब महल, इलाहाबाद

१९५७



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—जीवन कल्याण प्रेस, नैनी, इलाहाबाद।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कुछ शब्द

गत वर्ष मैंने पूज्य पिता जी के प्रोत्साहन से उन्हीं के संरक्षण में हिन्दी रंगमंच की सेवा के लिए 'श्री नटराज' नाम की संस्था को जन्म दिया। उत्तर-प्रदेश सरकार ने इस काम में थोड़ी आर्थिक सहायता भी दी। मुझे प्रसन्नता है कि मैं अपने प्रयत्नों में सफल रहा, एक वर्ष के भीतर ही हमने तीन नाटक जनता के समक्ष प्रस्तुत किए।

पहले दो अभिनय वाराणसी में प्रस्तुत हुए। प्रस्तुत नाटक 'चेत सिंह' के एक प्रमुख पात्र बख़्शी सदानन्द जी मेरे पूर्वज थे, अतः बाबू जी की यह राय नहीं हुई कि 'श्री नटराज' की ओर से—जिसका जन्मदाता मैं स्वयं था और जो बाबू जी की प्रेरणा से उनके ही संरक्षण में स्थापित हुआ—चेत सिंह का पहला अभिनय वाराणसी में ही मैं प्रस्तुत करूँ जो सौभाग्य से मेरे पूर्वजों का निवास-स्थान है। हमने दो अन्य नाटक वाराणसी में प्रस्तुत किए—'कोणार्क' (लेखक श्री जगदीशचन्द्र माथुर) और 'कौमुदी महोत्सव।' (लेखक डॉ० रामकुमार वर्मा) दर्शकों और समाचारपत्रों के मत से अभिनय में सफल रहे।

'चेत सिंह' मैंने मूलतः रेडियो के लिए लिखा था और यह लखनऊ-इलाहाबाद प्रसारण केन्द्रों से प्रसारित हो चुका है। मैंने सुना कि उसमें जिन कलाकारों ने भाग लिया था उनकी यह कांक्षा थी कि इसे पूरे नाटक का रूप दिया जाय तो अच्छा हो। जब 'श्री नटराज' द्वारा लखनऊ में अभिनय-प्रदर्शन के लिए मैं नाटकों की खोज कर रहा था उस समय फिर मेरे सामने यह माँग आई कि मैं 'चेत सिंह' को ही मंच-नाटक का रूप दूँ और इसे ही प्रस्तुत करूँ। भाई अमृतलाल नागर का विशेष आग्रह था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो उस समय लखनऊ आकाशवाणी केन्द्र में नाटक-निर्देशक थे और जिनके माध्यम से ही आकाशवाणी के कलाकारों की माँग मुझसे दुहराई गई थी। मुझे यह कार्य-भार स्वीकार करना पड़ा।

स्वीकार तो कर लिया किन्तु सामने भारी कठिनाई थी। चेत सिंह पर हिन्दी में विशेष ऐतिहासिक सामग्री का अभाव था—१६१८--२० में पूज्य पिता जी ने एक पुस्तक लिखी थी 'चेत सिंह' और काशी का विद्रोह जो ढूँढ़े भी कहीं न मिली—और अंग्रेज़ इतिहासकारों ने जो कुछ पंक्तियाँ चेत सिंह पर लिखी भी हैं वह नितांत एकाँगी और शरारतभरी हैं। मैं चाहता था कि मंच-नाटक के रूप में चेत सिंह का अर्द्ध-विराम—विराम तक पूर्ण ऐहितासिक हो अतः मुझे एक बार सभी प्राप्य-दुष्प्राप्य पोथियों का अवलोकन करना पड़ा। सबसे अधिक सहायता मुझे महाराज बनारस के हकीम मौलवी सैयद मज़हर हसन कौरवी के ग्रंथ 'तवारीख़े बनारस' से मिली जिसके लिए मैं आभार प्रदर्शित करता हूँ।

मुझे सन्तोष है कि 'चेत सिंह' का प्रस्तुत रूप विशुद्ध ऐतिहासिक है। चेत सिंह को नितान्त कायर, भगोड़ा और पतित सिद्ध करने वाले कुछ तथाकथित आन्दोलकों को—जिनका वाराणसी में 'चेत सिंह-स्मारक' को लेकर इस समय बवंडर आ गया है—इस रूप से निराशा हो सकती है किन्तु ऐतिहासिक तथ्यों और परिस्थितियों का गला नहीं घोंटा जा सकता था। कल्पना के पंखों पर भी अधिक बोझ नहीं डाला जा सकता था; क्योंकि १००-१५० वर्षों पूर्व के इतिहास का विवरण प्रस्तुत करने में इसकी गुंजायश न थी।

अभिनय के ही लिए यह नाटक लिखा गया था और मैं अपने सीमित ज्ञान और अनुभव के बल पर इसे लखनऊ में रंगमंच पर प्रस्तुत भी कर चुका हूँ। अभिनय के समय एक अर्द्ध-विराम तक मुझे बदलना नहीं पड़ा। कोई कारण नहीं है कि कोई अन्य व्यक्ति या संस्था इसे ज्यों का त्यों मंच पर न उतार सके।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्य पिता जी ने भूमिका-रूप में जो कुछ शब्द लिख दिये हैं उसके लिए उनका आभार मानना मेरे लिए धृष्ठता होगी। आभार अपनी पत्नी श्रीमती माधुरी का तथा उनकी बहन कुमारी कीर्ति का मानता हूँ जिन्होंने मेरे लिख चुकने पर पाण्डुलिपि सही रूप में तैयार की।

—सर्वदानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. काम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑव इण्डिया भाग दूसरा — हेनरी ब्रिवरिज ।

२. वारेन हेस्टिंग्स एण्ड ब्रिटिश इंडिया — पेन्डेरेल मून ।

३. मेमायर्स रिलेटिव टू दी स्टेट ऑव इंडिया — वारेन हेस्टिंग्स ।

४. वारेन हेस्टिंग्स एण्ड अवध — सी० कॉलिन डेविस ।

५. एडमिनिस्ट्रेशन ऑव वारेन हेस्टिंग्स — जी० डब्ल्यू० फ़ारेस्ट ।

६. दी हिस्ट्री ऑव ब्रिटिश इंडिया भाग चार — जेम्स मिल ।

७. तवारीख़े बनारस — हकीम मौलवी सैयद मज़हर हसन कोरवी, फतेहपुरी, तबीब महाराज बनारस ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमुख

श्री सर्वदानन्द के 'चेत सिंह' संबंधी नाटक में कुछ घटनाओं का थोड़ा-सा चित्र देखने को मिलता है जो आज से लगभग पौने दो सौ वर्ष पहले वाराणसी में घटी थीं। वारेन हेस्टिंग्ज़ उन दिनों इसी नगर में था। नगरवासियों का मातृभूमि-प्रेम उत्तेजित हो उठा था और ईस्ट इंडिया कम्पनी तथा उसके भारतीय प्रतिनिधि वारेन हेस्टिंग्ज़ की नृशंसता के प्रति क्रोध की भावना उद्दीप्त हो उठी थी। थोड़ी देर के लिये भारत के भावी इतिहास की कुंजी वाराणसी के निवासियों के हाथ में आ गई थी। यदि स्वयं चेत सिंह ने कुछ अधिक आत्मविश्वास और कर्मण्यता का परिचय दिया होता तो सम्भव था कि वारेन हेस्टिंग्ज़ कैद हो गया होता और भारतीय इतिहास का रूप कुछ दूसरा ही होता। 'चेत सिंह' के दीवान सदानन्द जी मेरे पूर्वज थे। उन्होंने जिस नीति का अवलम्बन किया वह स्वतंत्रता-प्रेमियों की दृष्टि में श्रेयस्कर नहीं कही जा सकती परन्तु यह ठीक है कि वह चेत सिंह की दुर्बलताओं से परिचित थे और यह हो सकता है कि जिन परिस्थितियों में उस समय बनारस राज्य पड़ गया था उनमें राज्य और राजा को किसी प्रकार बचाये रखने का दूसरा साधन नहीं था। परिणाम जो कुछ हुआ उसे हम सभी जानते हैं। न राज्य बचा, न राजा बचा और न राज्यवंश ही रह सका। जिन लोगों ने चेत सिंह के विरुद्ध षड्यंत्र किया था, जिन लोगों ने अंग्रेज़ों का साथ दिया था, उनकी बन आई। राज्य महीप नारायण सिंह को मिला जो बलवन्त सिंह की लड़की के लड़के थे। जाति-पाँति का अभिमान, आपसी कलह, देश द्रोह इन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बातों ने सैकड़ों वर्षों से इस देश का अनिष्ट किया है। इन्हीं की आवृत्ति वाराणसी में हुई। इस नाटक में उसी समय की घटनाओं का सजीव चित्रण है।

मैंने नाटक को स्टेज पर खेले जाते देखा है। यदि अच्छे अभिनेता मिल जायँ तो अभिनय निश्चय ही प्रभावोत्पादक और आकर्षक होगा।

सम्पूर्णानन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना

प्रस्तुत नाटक का सफल अभिनय २२-२३ अगस्त १९५६ को प्रथम बार लखनऊ में प्रस्तुत किया गया जिसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के महा-महिम राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने किया। कलाकारों की सूची निम्नलिखित है।

१—शेख़ अली हज़ीं ... ... श्री मुख्तार अहमद
२—राजमाता पन्ना ... ... कुमारी देवकी पांडे
३—मनियार सिंह ... ... श्री सन्तराम शुक्ल
४—बसावन ... ... किशनलाल दुआ
५—कजली ... ... कुमारी कान्ता पंजानी
६—चेत सिंह ... ... श्री सर्वदानन्द
७—रानी ... ... कुमारी मीरा शर्मा
८—सुजान सिंह ... ... श्री प्रयाग नारायण श्रीवास्तव
९—मीर ग़ुलाम हुसेन ... ... विश्वम्भर नाथ सिनहा
१०—बख्शी सदानन्द ... ... राधे बिहारी लाल श्रीवास्तव
११—मौलवी अलीउद्दीन कुबरा ... कब्बन मिर्ज़ा
१२—मार्कहम ... ... सुन्दर दर
१३—चेतराम ... ... प्रताप नारायण 'प्रवीण'

मुख पृष्ठ का चित्र

'चेत सिंह' नाटक के अभिनय का एक दृश्य। बाएँ से दाएँ—बसावन (श्री किशन लाल दुआ), चेत सिंह (श्री सर्वदानन्द) और रानी (कुमारी मीरा शर्मा)।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पात्र परिचय

प्रवेश क्रम से

१—शेख़ अली हज़ीं	ईरान के एक शाहज़ादे, बनारस आकर बस गये थे। सूफ़ी शायर।
२—राजमाता पन्ना	राजा बलवन्त सिंह की क्षत्राणी पत्नी। चेत सिंह की माता।
३—मनियार सिंह	बलवन्त सिंह के भतीजे। पहले राज्य इनको ही मिलने वाला था।
४—बसावन	चेत सिंह को पान खिलाने वाला नौकर। पहले चेतराम इस पद पर था।
५—कजली	चेत सिंह की पत्नी की बाँदी।
६—चेत सिंह	बलवन्त सिंह की क्षत्राणी पत्नी पन्ना के पुत्र। काशी के नरेश।
७—रानी	चेत सिंह की पत्नी। ठाकुर उमराव सिंह की पुत्री।
८—सुजान सिंह	चेत सिंह के छोटे भाई।
९—मीर गुलाम हुसेन	दारोगा तोपख़ाना। चेतसिंह के बहुत बड़े सहायक।
१०—बख़्शी सदानन्द	चेत सिंह के सबसे बड़े सहायक। औसान सिंह के पतन के बाद प्रमुख अधिकारी।
११—मौलवी अलीउद्दीन कुबरा	काशी का एक मुसलमान, अंग्रेज़ों का हिमायती और सहायक। बाद में बाबू ननकू सिंह द्वारा मारा गया।
१२—मार्कहम	हेस्टिंग्स का प्रतिनिधि।
१३—चेतराम	चेत सिंह का पुराना नौकर जो अंग्रेज़ों से मिल गया था।
घटना काल	१९, २० अगस्त, सन् १७८१ ई०।
घटना स्थल	रामनगर और शिवालाघाट, काशी।



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पूर्वज

बख्शी सदानन्द जी

की

स्मृति में

सादर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम दृश्य

[रामनगर में काशी राज्य के संस्थापक महाराज बलवन्त सिंह द्वारा निर्माण कराये गये क़िले का एक कक्ष। समय लगभग नौ बजे रात्रि। कक्ष में झाड़-फ़ानूस लटक रहे हैं और एक दीवार पर बलवन्त सिंह का तैल चित्र लटक रहा है। दूसरी ओर एक बड़ी और सुन्दर नीची चौकी पड़ी हुई है जिसके किनारे और पाये रजतवर्णी हैं और जिस पर एक झालरदार क़ीमती मख़मली चादर पड़ी है। एकाध मसनदें भी हैं। कोनों में ऊँचे आधारों पर बड़े दीप जल रहे हैं और उन्हीं के पास पात्रों में जलती हुई धूप की सुगन्धित धूपमालाएँ कक्ष में बिखर रही हैं। यत्र-तत्र फूलों की सजावट है किन्तु फूल मुरझा चले हैं। कक्ष में पीछे की ओर खंभों की मेहराबों के पार एक छोटा-सा बरामदा है जिसके पीछे गंगा के दूसरे किनारे के घाटों पर जलती हुई टिमटिम दीपावलियाँ जुगनुओं की पाँत-सी दिखायी पड़ रही हैं। एक खम्भे का सहारा लिये, गंगा की ओर मुख किये, शेख़ अली हज़ीं तन्मय भाव से खड़े हैं। नेपथ्य में घड़ी-घण्टा के घोष के साथ नर-नारी-समवेत कंठ से रावणकृत शिव-ताण्डव स्तोत्र का गम्भीर पाठ सुन पड़ता है।]

जटाटवीगलज्जल - प्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजंगतुंग - मालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्ड-ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥
जटाकटाहसंभ्रम भ्रमन्निलिंपनिर्झरी,
विलोलवीचिवल्लरी विराजमान मूर्द्धनि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर—
स्फुरद्दिगंत सन्तति प्रमोदमान मानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्द्धरापदि क्वचिद्दिगंबरे
मनोविनोदमेतु वस्तुनि ॥
जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्वगुत्तरीय मेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं विभर्तु भूतभर्त्तरि ॥

[पाठ चलता रहता है और शेख़ साहब की तन्मयता भंग नहीं होती। राजमाता पन्ना, बलवन्त सिंह की क्षत्राणी पत्नी, धीरे-धीरे प्रवेश करती हैं। सामने स्वर्गीय पति के तैल चित्र की ओर एकटक देखकर ठिठक जाती हैं। हाथ में फूलों की डलिया है, श्वेत वस्त्र धारण किये हैं। इधर-उधर के एकाध केश भी श्वेत हो चले हैं। मुद्रा गंभीर है। पाठ के स्वर मन्द पड़ते हैं। 'हर-हर महादेव' का दो-तीन बार उद्‌घोष सुनाई पड़ता है। फिर शान्ति छा जाती है। शेख़ साहब की तन्मयता भंग होती है और उधर ही मुँह किये गुनगुनाने लगते हैं।]

अज़ बनारस न रवं।मावदे आमस्त ईंजा ।
हर बरहमन पिसरे लछमनों रामस्त ईंजा ॥

परी रुख़ाने बनारस बसद् करिश्मओ रंग ।
ब गंग ग़ुस्ल कुनद् व बसंग पामालंद ॥

[राजमाता पन्ना सुनती रहती हैं, अन्तिम पंक्ति के समाप्त होते ही ठण्डी साँस ले उठती हैं।]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजमाता पन्ना : लछमन और राम ही नहीं शेख़ साहब, विभीषण भी। आज काशी की गलियों में विभीषण भी घूम रहे हैं।

शेख़ साहब : (घूम कर) अरे राजमाता ! आप कब आईं ? (हँस कर) मैं तो सुमेरु मन्दिर की पूजा के बोल, उस पार के घाटों पर के जुगनू से टिमटिमाते दियों की पाँत और बीच की सियाही में मचलती गंगा की लहरों में एकदम खो गया था।

राजमाता पन्ना : लहरें उठती हैं, आगे बढ़ती हैं और फिर गिर जाती हैं शेख़ साहब ! एक लहर के पीछे की दूसरी लहर उसे आगे धक्का देकर बढ़ाती है और अपने लिए रास्ता बना कर उसे डुबा देती है। यही तो सनातन नियम है। (चौकी के पास फूलों की डलिया एक छोटी चौकी पर रख देती हैं और बैठ कर) आप तो स्वर्गीय बड़े महाराज के समय ही ईरान से यहाँ आये थे। आपने तो अपनी आँखों से एक सपना सच होते देखा है, एक नये राज्य की नींव पड़ते देखी है, उस नींव पर वैभव के महल खड़े होते देखा है। अब इन्हीं आँखों से उन महलों को खंडहर बनते देखिए।

शेख़ साहब : राजमाता, यह सब आप क्या कह रही हैं ? बेटा चेत, चेत सिंह कहाँ हैं ?

राजमाता पन्ना : (चेत सिंह के नाम पर चौंक कर) चेत सिंह ? शेख़ साहब, आप अभी सियाही में मचलती गंगा की लहरों की बात कर रहे थे न ! मेरा चेत सिंह भी एक दिन इसी सियाही में डूब जायगा ! उसे कोई बचा न सकेगा। (सिर झुका लेती हैं।)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेख़ साहब : (पास जाकर) राजमाता ! आप जानती हैं, बड़े महाराज मुझे कितना मानते थे ! मन के सुख और चैन की खोज में ईरान से यहाँ आया। बड़े महाराज के सुभाव और गंगा की लुभावनी धारा ने मेरा मन मोह लिया। तब चेत सिंह छोटा ही था, उसे फ़ारसी पढ़ाते-पढ़ाते न जाने कितनी बार सोचा है कि एक दिन वह गद्दी पर बैठेगा, मेरी आँखें जुड़ायेंगी।.........(प्रसन्न होकर) वह राजा हुआ, मेरी मुँह की माँगी मुराद मिली। मेरी दुआ में मीठे फल लगे, मेरी अरमानों की बगिया में फूल खिले।...... (उदास होकर) लेकिन आज आपको हुआ क्या है राजमाता ?

राजमाता पन्ना : (चुप ही रहती हैं।)

शेख़ साहब : मुझसे भी न कहियेगा रानी माँ ? यह बूढ़ा कुछ कर नहीं सकता पर सुन तो सकता है ! बूढ़े के बाज़ुओं में ताक़त न रह गई हो पर आँखों में पानी अब भी बाक़ी है रानी माँ।

राजमाता पन्ना : इससे तो यही अच्छा था कि मेरा बेटा राजा न होता। काशी का राज्य बड़े महाराज की इच्छानुसार चेता के चचेरे भाई बाबू मनियार सिंह को ही मिलता। तब उसका यह अपमान तो न होता। अपने ही घर में लाज से माथा झुका कर तो न चलना पड़ता। अंग्रेज़ों के आगे झोली फैला कर ज़िन्दा रहने की भीख तो न माँगनी पड़ती। कौनसी वह कुघड़ी थी जब मैंने चेत सिंह को राजा बनाने के लिए भवानी माँ की ड्योढ़ी पर सिर धुन-धुन कर बिनती की थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेख़ साहब : सच्चे दिल से की गई विनती अकारथ नहीं जाती रानी माँ ! अपने कलेजे के टुकड़े के लिए माँ की पुकार भगवान के यहाँ से भी अनसुनी नहीं लौटती। आज आपका मन कुछ डाँवाडोल है। कोई आग भीतर ही भीतर उसे झुलसा रही है। बोल सूधे नहीं निकल रहे हैं। आज पूजा से भी जल्दी लौट आईं।

राजमाता पन्ना : आज पूजा के समय लोगों के मुखों पर उल्लास नहीं था शेख़ साहब ! भक्ति की वह तन्मयता आज नहीं थी जो सब ओर से सिमट कर सामने की प्रतिमा पर केन्द्रित रहती है। सब जैसे डरे हुए थे, सब के हृदय का भय उनकी वाणी में बोल रहा था। आपने सुना है न शेख़ साहब ! फ़िरंगी लाट मेरे चेत सिंह से ५० लाख रुपये जुर्माना वसूल करने कलकत्ते से काशी आया है।

शेख़ साहब : (गम्भीर मुद्रा में) हाँ, सुना है राजमाता ! लेकिन यह तो ख़ाली रुपये का सवाल नहीं है, यह तो चेता की इज़्ज़त का सवाल है, काशी की इज़्ज़त का सवाल है, (**बलवन्तसिंह के चित्र के पास जाकर**) तुम्हारी आन और शान का सवाल है। (**राजमाता की ओर मुड़कर**) साढ़े बाइस लाख रुपये तो हर साल चेत सिंह देता ही जा रहा है। अब यह पचास लाख जुर्माना ! लेकिन मेरा चेता यह रुपये देगा कहाँ से रानी माँ ?

राजमाता पन्ना : फ़िरंगी कहता है, रैयत से वसूल करके दो। लेकिन रैयत का गला कहाँ तक दबाया जाय शेख़ साहब ! आज बनारस का बच्चा-बच्चा फ़िरंगी की इस चाल पर ज्वाला-मुखी बन गया है। सन्तोष अब भड़क उठना चाहता है। (धीरे से) हमारी भी पूरी तैयारी है शेख़ साहब। रामनगर के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़िले में ही बहुत से सिपाही जमा हैं। मैंने काशी के हर महाजन से आठ-आठ, दस-दस सिपाही अपने घर में छिपा कर रखने को कहा है।

[नेपथ्य में दो बार "हर-हर महादेव" का घोष। मनियार सिंह तेज़ी से आते हैं।]

मनियार सिंह : (शेख़ साहब और राजमाता को देख कर) ओ! शेख़ साहब, आदाब बजा लाता हूँ। राजमाता! (चरण स्पर्श करने को झुकते हैं।)

राजमाता पन्ना : (उठाकर) नहीं बेटा, हो गया। (ठोढ़ी छू कर हाथ चूम लेती हैं।)

मनियार सिंह : (उठ कर) शेख़ साहब, महाराज तो यहाँ नहीं आये? मन्दिर में भी नहीं हैं।

शेख़ साहब : यहाँ तो आये नहीं। शायद.........

मनियार सिंह : अनंग-क्रीड़ा हो रही होगी। यही उन्हें ले डूबेगी एक दिन। चलूँ, देखूँ कहाँ हैं। (व्यस्त भाव से जाना चाहते हैं।)

राजमाता पन्ना : (उठ कर, उन्हें पुकार कर) ठहरो, मनियार सिंह! (मनियार सिंह रुक जाते हैं। राजमाता पन्ना पास जाकर) मनियार बेटा, चेत सिंह कौन है तुम्हारा?

मनियार सिंह : मैंने तो उन्हें भाई ही समझा है राजमाता!

राजमाता पन्ना : भाई समझा है, भाई माना नहीं? और भाई की माँ को तुम लोग राजमाता पुकारते हो? इससे उसके कलेजे में कैसी हूक उठती है, यह तुम लोग नहीं जानते?

मनियार सिंह : यह सब आप क्या कह रही हैं राजमाता? महाराज की माँ हैं आप। राजमाता तो सभी कहते हैं।

राजमाता पन्ना : हाँ सभी कहते हैं। लेकिन जितनी बार यह शब्द कानों में पड़ता है उतनी बार इसके साथ लिपटी हुई घृणा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे धरती में समा जाने को उकसाती है। (बलवन्त सिंह के चित्र के तले बैठ कर रुँधे कंठ से) मुझसे कौन-सा अपराध हुआ था देवता ! यह मेरे किस पाप का दण्ड है कि मेरा मातृत्व भी आज मुझे मुँह चिढ़ाता है ! बोलो, घृणा की चादर ओढ़ा कर तुम मुझे क्यों ले आये थे ! डोभी के ठाकुर की कन्या को क्या कहीं डूब मरने के लिए जल भी न मिलता ! (आँसू बहने लगते हैं।)

शेख़ साहब : रानी माँ, आज आपकी तबीयत ठीक नहीं है। आप सोने जायँ।

मनियार सिंह : (पास जाकर उठाते हुए) यह आँसू हमारा अनिष्ट करेंगे राजमाता ! चेत सिंह को इस समय आप की वही आग चाहिये जिसे देख कर डोभी की पुरुषविहीन गद्दी में बड़े महाराज के हाथ से तलवार छूट गई थी। यह आँसू नहीं चाहिए जो उनके शीतल मन को और भी शीतल कर दे। उनकी कायरता को और भी बल दे। उसी बुझी हुई ज्वाला में आहुति डालने के लिये मैं लखनऊ से एक बार फिर यहाँ आया हूँ। नहीं तो आप जानती हैं राजमाता, मन की कौन-सी आग लेकर मैं यहाँ से चला गया था। काशी राज्य पर विपत्ति न आई होती तो चेत सिंह के लिए मनियार सिंह कभी न लौटता।······चलूँ देखूँ, महाराज कहाँ हैं ! एक ज़रूरी काम है। (तेज़ी से चले जाते हैं।)

(नेपथ्य में बादल गरजने का स्वर)

राजमाता पन्ना : सुना शेख़ साहब, मनियार जाते-जाते क्या कह गया ! यदि काशी राज्य पर विपत्ति न आई होती तो वह चेत सिंह के लिए कभी न लौटता। मेरे चेत से सबको घृणा है, सबको नफ़रत है······सबको······

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेख़ साहब : आपने यह नफ़रत ही देखी रानी माँ ! आदमी के लिए इस नफ़रत के पीछे देश के प्रेम, वतन की दीवानगी और मुहब्बत के जो फूल खिल रहे हैं, उसे नहीं देखा। आदमी आता है और चला जाता है, वतन की इज़्ज़त चली गई तो हाथ मल-मल कर पछताना होता है।

राजमाता पन्ना : आप भी मेरे चेता से घृणा करते हैं शेख़ साहब ?

शेख़ साहब : क्या कह रही हैं रानी माँ ? माँ की मामता क्या इतनी अन्धी हो गई ! यह बूढ़ा चेत सिंह से नफ़रत करेगा जिसकी गोद में खेल कर वह बड़ा हुआ है ? जानती हैं रानी माँ ? मेरी चाँदी की छपरखट पर और कोई नहीं बैठ सकता था, बचपन में बैठता था तो यही चेता। बड़े महाराज के कहने से जब उसे फ़ारसी पढ़ाने बैठता था तो भाग-भाग जाता था। जब आप बरजती थीं तब कैसा मुँह चिढ़ाता था। याद है न ? मैं उससे नफ़रत करूँगा ? अपने कलेजे के टुकड़े से नफ़रत करूँगा ? यह मुझसे आपने क्या केह दिया राजमाता ?

राजमाता पन्ना : **(उदास स्वरों में)** क्षमा करें शेख़ साहब, माँ का हृदय है न ! पर अपने लाल से सबको घृणा करते देखती हूँ तो छाती में आग-सी लग जाती है। जी करता है, सब कुछ जला कर भस्म कर दूँ। चेता को अपनी कोख से जन्म देकर मैंने क्या इतना बड़ा अपराध किया है कि दिन-रात, सोते-जागते कलंक के काले नाग मुझे डसते रहें ? (कंठ रुँध जाता है।)

शेख़ साहब : **(दृढ़ स्वरों में)** किसी बच्चे को जनम दे कर कोई माँ नफ़रत का काम नहीं करती राजमाता ! नफ़रत है धर्म की उस झूठी शान में जो अपने को आदमी से बड़ा मानती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। नफ़रत का बीज है उस खोखले ईमान में, जो इन्सान से ऊँचा होने का दावा करता है। नफ़रत के बायस हैं वह अन्धे उसूल जो अपनी दीवानगी में इन्सान को इन्सान से अलग करते हैं। अपने भगवान् की नज़रों में आप उतनी ही ऊँची हैं रानी माँ, जितनी सती सीता !

राजमाता पन्ना : (उत्साह से) कहते रहिए, कहते रहिए शेख़ जी। (आँखें बन्द कर) घृणा से विषाक्त कण्ठ में आप के शब्द अमृत की बूँद बन कर शीतलता दे रहे हैं। अपमान और लाञ्छन के गहरे अन्धकार में आप के स्वर प्रकाश की बाँसुरी से लग रहे हैं। (**बलवन्त सिंह के चित्र के पास जल्दी से जाकर**) अब लज्जा क्या है देवता ? मैंने तुम से प्रेम करके कोई अपराध नहीं किया, कोई अपराध नहीं किया······कोई···अपराध···नहीं किया। दुनिया चाहे जो कहे, अपने मन के सामने मैं कलंकिनी नहीं हूँ, अपराधिनी नहीं हूँ, पापिनी नहीं हूँ। **(तन्मय भाव से चित्र पर ही माथा टेक कर खड़ी रहती हैं।)**

शेख़ साहब : अपनी समझ से दीन और ईमान की ख़िदमत में ही बच्चे से बूढ़ा हुआ हूँ रानी माँ.! आप का धर्म नहीं जानता, आप के मज़हबी उसूल नहीं जानता; लेकिन एक बात जानता हूँ। सब धरमों से बड़ा धरम, सब उसूलों से बड़ा उसूल, सब मज़हबों से बड़ा मज़हब है मुहब्बत— जो इन्सान को प्यार नहीं कर सकता वह ख़ुदा को भी नहीं प्यार कर सकता।

राजमाता पन्ना : लेकिन आप तो देख रहे हैं शेख़ साहब ! आज हम लोगों से घर वाले ही कितनी घृणा करते हैं ! बड़े महाराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मैं सजातीय नहीं हूँ। वह भूमिहार और मैं ठाकुरों के घर की, फिर भी मुझे रानी बना कर ले आये। मैंने चेत सिंह को जन्म दिया। मेरे पुत्र के जन्म पर राज्य में मंगल नहीं मनाया गया, सब मुझसे दूर थे और मैं अकेली ही सौर में पड़ी-पड़ी अपने बेटे के लिए मंगल-गान गा रही थी—गाइये गणपति जगबंदन। सुनेंगे शेख़ साहब वह कथा ?

शेख़ साहब : अब रात ज्यादा हो रही है, आप सोने जायँ।

राजमाता पन्ना : एक बार कह लेने दीजिए शेख़ साहब ! मन का बोझ हल्का होता है। (**आकर चौकी पर बैठ जाती हैं।**) तब चेत सिंह पैदा ही हुआ था। गंगापुर के गढ़ के परकोटे पर से बड़े महाराज ने सुना, उनके चचेरे भाई चिल्ला चिल्लाकर कह रहे हैं यह सब आनन्द उत्सव बन्द करो। यह सन्तान वर्णसंकर है। वर्णसंकरों के जन्म पर उत्सव कैसा ? (**कोई भारी वस्तु गिरने का स्वर।**)

शेख़ साहब : रानी माँ !

राजमाता पन्ना : हाँ शेख़ साहब, सौरगृह में पड़ी-पड़ी मैं यह सुन कर तिलमिला उठी। मैंने उसी समय महाराज को बुला कर कहा—मेरी पहली सन्तान के जन्म पर राज्य में उत्सव नहीं मनाया गया। अगर आगे चल कर मेरे बेटे को लोग राजा न बनने देंगे तो माँ के हृदय की वेदना उन्हें तीन पीढ़ी भी राज न करने देगी, न करने देगी।

[दूर से शहनाई के स्वर सुन पड़ते हैं, साथ ही निम्नलिखित पाठ—]

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा।
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥

शेख़ साहब : रानी माँ, मन्दिर में शयन की शहनाई बज चुकी । आरती भी ख़त्म हो गई । बाँदी दिया बुझाने आती होगी । आप अब ऊपर जायँ, मैं भी चलूँगा ।

राजमाता पन्ना : (उठते हुए, ठंढी साँस लेकर) हाँ शेख़ साहब, यह अपमान की कथा तो कभी न समाप्त होगी । जितनी बार कहती-सुनती हूँ, एक नई आग से तन-बदन फुँकने-लगता है । गंगा माँ का इतना जल भी इस कलंक को धो नहीं सकता ।······जाती हूँ, मेरे चेता पर विपत्ति आई है । भगवान् भोलेनाथ से रात भर विनती करूँगी, मेरे चेता का बाल भी बाँका न हो । (फूलों की डलिया उठा कर चलती हैं । क्षण भर बलवन्त सिंह के चित्र के पास रुकती हैं । फिर तेज़ी से बाहर निकल जाती हैं । नेपथ्य में दो-तीन बार 'हर-हर महादेव' का घोष सुन पड़ता है ।)

शेख़ साहब : (टहलते हुए) छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच, अमीर-ग़रीब ! मज़हब आज इन खिलौनों से खेल रहा है । इन्सान अपनी बनाई हुई भूलभुलैया में भटक रहा है । नफ़रत को वह आज देवता मान बैठा है, मुहब्बत को ठुकरा कर शैतान की इबादत कर रहा है । आदमी छोटा हो गया है आदमी-यत मर गई है और उसकी क़ब्र पर हैवानियत नंगा नाच-नाच रही है । या ख़ुदा, तेरे बन्दे आज कहाँ जा रहे हैं ! छुओ मत, खाओ मत, ब्याहो मत, यह पाप है । किसी को सहारा देकर ऊपर मत उठाओ, यह पाप है । अन्धे जग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आँखों से क़दम-क़दम पर पाप दिखाई पड़ता है। यह सब क्या है मेरे ख़ुदा ?

अज़ बनारस न रवं माबदे आमस्त ईंजा।

हर बरहमन पिसरे लछमनो रामस्त ईंजा।

[गुनगुनाते हुए विचारमग्न मुद्रा में, एक ओर निकल जाते हैं। मनियार सिंह का पुनः प्रवेश। साथ में सुजान सिंह हैं। नेपथ्य में 'हर-हर महादेव' का घोष]

सुजानसिंह : यह "हर-हर महादेव" की पुकार सुनी बाबू मनियार सिंह ? लगता है, क़िले में पहरा मुस्तैदी से चल रहा है। (खिड़की से बाहर झाँक कर) हाँ, परकोटों पर धीमी-धीमी रोशनी भी तो हो रही है !

मनियार सिंह : (खिड़की से बाहर झाँकते हुए चुप रहते हैं।)

सुजान सिंह : उफ़ री यह रात ! लगता है, आज यह बादल बिना बरसे न रहेंगे। (क्षण भर रुक कर) कुछ बोलते क्यों नहीं आप ?

मनियार सिंह : (खिड़की से हटते हुए) बरसेंगे नहीं सुजान सिंह। यह बादल बरसने वाले नहीं हैं। हाँ, महाराज क्या विश्राम कर रहे हैं ? इस आँधी—तूफ़ान में······

सुजान सिंह : महाराज को विश्राम कहाँ साहब ? उनके मन में जो आँधी चल रही है उसके सामने बाहर की यह आँधी क्या है ? अच्छा, चारों ओर का पहरा ठीक है न ? कहीं कुछ ग़फ़लत तो नहीं है ?

मनियार सिंह : चेत सिंह आज अकेले नहीं हैं, सुजान सिंह ! समूची काशी की आँखों का एक-एक बूँद आँसू महाराज की रक्षा कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। सबके कण्ठों की प्रार्थना चेत सिंह के लिए रक्षा-कवच बनी हुई है।

सुजान सिंह : फिरंगी द्वारा हमला होने पर.........

मनियार सिंह : वह काट कर धर दिये जायँगे, समझे ! अभी काशी वालों से पाला नहीं पड़ा उनका। जानते हैं, राजमाता पन्ना ऊपर से बहुत अस्थिर हैं पर अन्दर ही अन्दर काशी के हर महाजन के घर आठ-दस सिपाही उन्होंने भर दिये हैं। प्रजा इस समय बारूद का ढेर हो रही है जिसमें एक चिनगारी दिखाने भर की देर है। इस समय प्रजा के असन्तोष से जो खिलवाड़ करने जायगा, वह वारेन हेस्टिंग्स हो या और कोई, अपनी ज्वाला में खुद ही भस्म हो जायगा।

सुजान सिंह : (व्यंग्य से) फिरंगी तो महाराज को राजा मानने को भी तैयार नहीं है। कहता है, भूमिहारों के प्रधान को राजा कहते हैं। कहता है उनके राज में अन्धेर मचा है।

मनियार सिंह : लेकिन प्रजा अपने राजा को पहचानती है बाबू सुजान सिंह ! चोरी, डाका और हत्या के बीच से शासन चलाने वाला शासक प्रजा के मन में वह दर्द पैदा नहीं कर सकता जो आज अपनी आँखों देख रहा हूँ। बलात्कारों की छाँह में माँ-बहनों के नेत्रों से वह आशीष नहीं झरता जो अपने कानों से सुन रहा हूँ। काश, स्वतंत्रता के लिए, आज़ादी के लिए जनता की वह करवट आपने भी देखी होती !

सुजान सिंह : देखी नहीं, लेकिन उस करवट से हिल उठने वाली धरती का कम्पन अनुभव कर सकता हूँ। जानता हूँ, स्वतंत्रता के लिए जम कर जूझ पड़ना किसे कहते हैं। (पास जाकर)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू मनियार सिंह, क्यों न प्रजा के असन्तोष और स्वतंत्रता की इस तड़फड़ाहट का लाभ हम उठायें ? ज़रा-सा संकेत भर मिल जाय !

मनियार सिंह : जानता हूँ । तुम्हारी बेचैनी समझता हूँ । पर बख़्शी जी ऐसा नहीं होने देना चाहते । राजमाता भी नारी हैं न, बख़्शी जी उन्हें भी रोके हुए हैं । बस, रानी साहब पर उनका बस नहीं चलता । वह साक्षात् देवी काली हैं, महाराज को वही भीतर से बल दे रही हैं ।

सुजान सिंह : रानी साहबा तो अपना धर्म पालन कर रही हैं । पति को प्रेरणा देना उनका कर्त्तव्य है । मैं भी कहे देता हूँ, फ़िरंगी से लोहा लेना ही होगा । हम फ़िरंगी से लड़ कर पार नहीं पा सकते पर आख़िर यह अपमान के घूँट पी कर कब तक जीते रहें ? हम यों ही बैठे-बैठे मुँह ताकते रहें और चुपचाप एक दिन फ़िरंगी के ग़ुलाम बन जायँ । शिः ।

मनियारसिंह : हिम्मत न हारिए । बख़्शी जी जो कर रहे हैं, कुछ सोच-समझकर कर रहे हैं । (उत्तेजना से) एक बात याद रखिये बाबू साहब ! बख़्शी जी के मन में देश का दर्द हम-से आपसे कम नहीं है । वह प्राण रहते देश पर फ़िरंगियों की हुकूमत नहीं होने देना चाहेंगे । (रुक कर, भारी कंठ से) और जब स्वतंत्रता पर ब्रज्र गिरना ही होगा तब सुजान सिंह और मनियार सिंह भी अपने प्राण होम देने में किसी से पीछे न रहेंगे । क्यों न बाबू साहब !

सुजान सिह : (गर्व से) एक प्राण क्या, सौ प्राण भी अपने भैया के और महाराज के चरणों पर निछावर कर सकता हूँ साहब ! इस देश पर, काशी नगरी पर, फ़िरंगियों का राज होगा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुजान सिंह खड़ा देखता रहेगा ? यह नहीं हो सकता। (धीरे से) लेकिन बख़्शी जी लड़ाई क्यों नहीं छेड़ना चाहते ?

मनियार सिंह : सिन्धिया के महाराज के यहाँ से फ़ौज आने वाली है। बख़्शी जी उसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लड़ाई तो होगी ही बाबू साहब ! आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों। कम्पनी बहादुर के आगे अवध के नव्वाबों की तरह हमारे महाराज चेत सिंह को घुटने टेक कर गिड़गिड़ाना नहीं पड़ेगा।

सुजान सिंह : (उत्साह से) ठीक कहते हैं। लड़ाई छिड़ भर जाय, फिर हमारे जौहर लोग देखें। फिरंगी भी समझ ले कि किसी से पाला पड़ा था। जानते हैं आप, जब महाराज बक्सर में फिरंगी लाट से मिलने गए थे तब उसने क्या अफ़वाह उड़वाई थी ?

मनियार सिंह : क्या ?

सुजान सिंह : प्रचार करवाया था कि महाराज चेत सिंह ने उसके बूटों पर अपनी पगड़ी रख दी और क्षमा की भीख माँगी।

मनियार सिंह : (क्रोध से चीख़ कर) बाबू साहब !

सुजान सिंह : हाँ साहब, सुन कर आँखों में ख़ून उतर आया। इच्छा हुई कि फिरंगी की उस ज़ुबान को उसी दम खींच लूँ जिस से महाराज के लिए ऐसी बात निकली। पर बख़्शी जी यह सब सुन कर भी चुप रहे, उनके चेहरे पर शिकन तक न आई। जैसे उनके ऊपर इसका कुछ असर ही नहीं हुआ। अच्छा, क्या सचमुच वह विचलित नहीं होते ?

मनियार सिंह : (कुछ सोचते हुए) हूँ। लोग तो ऐसा ही समझते हैं बाबू साहब ! आप जानते नहीं, उनके विरुद्ध यहाँ भीतर ही भीतर एक षड्यंत्र चल रहा है। लोग तो दबे-दबे यहाँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक कहने लगे हैं कि बख़्शी जी वारेन हेस्टिंग्स का पक्ष प्रबल कर रहे हैं।

सुजान सिंह : क्या यह सच है ? तब महाराज का क्या होगा ?

मनियार सिंह : (उत्तेजित होकर) बाबू सुजान सिंह ! यह बात उस दिन सच होगी जिस दिन सूरज पच्छिम से निकलने लगेगा। जिस दिन चाँद से अमृत के स्थान पर आग बरसने लगेगी। बख़्शी जी जिस दिन महाराज चेत सिंह से छल करेंगे उस दिन यह धरती फट जायगी, आकाश पृथ्वी पर आ रहेगा। (रुक कर) हाँ, बख़्शी जी की नीति कभी-कभी लोगों की समझ में नहीं आती।

सुजान सिंह : क्या जानें, यही बात होगी।......(क्षणभर ठहर कर आहट लेते हैं।) महाराज जब बक्सर गये थे तब साथ में पाँच सौ नावें ले गए थे, दो हज़ार सिपाही और डेढ़ सौ बर्कन्दाज़। फिरंगी जल-भुन कर ख़ाक हो गया। उसकी हिम्मत तो देखिये, कहता है कि महाराज ने यह अच्छा नहीं किया। उन्हें अकेले, ग़ुलामों की तरह, डरते-डरते जाना चाहिए था।

मनियार सिंह : (बाहर झाँक कर) उफ़, दो बजते होंगे। गंगा कैसी चढ़ी हुई हैं बाबू साहब ! रामनगर से शिवाला घाट तक पानी ही पानी देख रहा हूँ। ऐसी घटाटोप अँधियारी है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता।

सुजान सिंह : (पास जाकर) क़िले से परकोटों पर की रोशनी उतर कर गंगाजी की लहरों पर कैसी खेल रही है !

मनियार सिंह : (बात टालते हुए) महाराज सीधे राजमाता के पास तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चले गए ? अब तो उन्हें आना चाहिये । मैं जाकर देखूँ बाबू साहब ।

सुजान सिंह : हाँ, देख लीजिए । मैं भी तब तक एक चक्कर लगा कर यहाँ के पहरे का इन्तज़ाम देख लूँ ।

[सुजान सिंह एक ओर और मनियार सिंह दूसरी ओर जाते हैं । मंच पर थोड़ी देर शान्ति रहती है । दूसरी ओर से राजा चेत-सिंह को पान खिलाने वाला नौकर बसावन आता है और चौकी पर से मसनद और चादर आदि उठाते हुए गुनगुनाता है—चोट मारेलू घुंघटवा के ओट गोरिया ।]

बसावन : ई कजरिया के हम का करीं । कहत-कहत हार गइली कि हेरे, तनी जल्दियै आय के दीया बत्ती सब बुताय देवल कर, तउन ऊ मानी थोड़ौ । रानी जी के संगे-संगे मउज लेत होईं, अब मरैं ससुर बसावन ! (**सामान उठाता है और गुन-गुनाता है—चोट मारेलू घुंघटवा के ओट गोरिया । हाँ चोट**·········) अउर तनी नांव त देखऽ । कजरी !

कजली : (**दूसरी ओर से प्रवेश कर, कमर पर हाथ रख के**) का हो बसावन, हमरे नांव के का रोवत हौअऽ ?

बसावन : (**एकदम प्रेम की मुद्रा में हताश स्वर से**) अरे हमार कजरो, तोहरे नांव के न रोअब त केकरे नांव के रोअब ? (**पास जाकर**) आज बड़ी देरी में अइलू ? हमरे भित्तर (हाथ से इशारा करके) ऐसन-ऐसन होऐ लगल ।

कजली : (**हाथ से परे हटाकर**) एजा ओहर, तोहरे तो बड़ी जल्दी ऐसन ऐसन होऐ लगला । रानी जी और महाराज अबहीं जागत हौअन ! बड़े मुस्किलन हम अइलीं है । (**प्रेम की दृष्टि से देखकर**) तू हमार इन्तजार करत रहलऽ ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसावन : (हृदय पर हाथ रख कर) अब तोहँके का बताईं कजरो ! रानी जी के साथे रहत-रहत तोहऊँ रानी होय गइलू न !

कजली : रानी जी के जिउ करऽ हाल हमहीं जानी ला बसावन। बिचारी सूख के अमहर होय गइल हइन। महाराज कऽ हाल देख-देख के उनकर कलेजा मुँह के आय जाला। बाकी एक बात हौ बसावन। रानी जी न होतिन त महाराज कऽ का होत ?

बसावन : हूँ। ई तो सोचने की बात जरूर है। हमत एक्के बात जानीला कजरो, महाराज न रहि हैं त बसावन भी न रही। बसावन पढ़ल लिखल नाहीं है त न सही पर जान देना जानता है। महाराज पर आँखें जे उठाई ओकर आँख बाबू बसावनसिंह निकाल लेइहैं।

कजली : अच्छा, अच्छा। ढेर फारसी जिन बूकऽ। तोहार दिलतऽ ऐसन ऐसन करत रहैला, तू का करबऽ ? त तू तरवार देखतै नौ दुई ग्यारह होय जइबऽ।

बसावन : तू बसावन के दिल क हाल का जानऽ हो कजरो। रानी जी के ऐसन दिल होतऽ तऽ जनतू।

कजली : रानी होय चाहे बाँदी, दिल सबके होला बसावन।

[दूसरी ओर से राजा चेत सिंह का प्रवेश। हाथ में एक फूल है जिसे सूँघते जाते हैं और सुहलाते जाते हैं। कजली की बात सुन लेते हैं, फिर चौकी पर बैठ जाते हैं। बसावन जल्दी से सहम कर चादर बिछाने लगता है, उसे हाथ से रोक देते हैं। कहते हैं— 'रहने दो बसावन' कजली भी सहमी खड़ी है।]

चेत सिंह : (तकिये पर अधलेटे से) तुमने ठीक कहा कजली, दिल सबके पास होता है। राजा हो या रंक, रानी हो या बाँदी, हृदय में धड़कन तो सबके होती है। फिर लोग इस बात को समझना क्यों नहीं चाहते ? बोलो !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कजली : (भयभीत सी चुप रहती है। बसावन एक दिये के पास जाकर लौ उसकाने लगता है।)

चेत सिंह : (तीव्र स्वरों में) बोलो कजली ! लोग यह सीधी-सी बात क्यों नहीं समझते ? (कुछ रुक-रुक कर) एक युग था जब राजा दुष्यंत के हृदय में धड़कन हुई। उन्हें मिली शकुन्तला । (हँसकर) हः हः हः, आज बसावन के हृदय में धड़कन हुई तो उसे मिली कजली। अगर दुष्यंत-शकुन्तला का मिलन पाप नहीं तो बसावन-कजली का मिलन पाप क्यों हो ? आह !

(बसावन कजली एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कुरा देते हैं। क्षण भर बाद कजली चौकी के पास बैठकर।)

कजली : राजा जी, आज जिउ नाहीं अच्छा हौ का ?

चेत सिंह : हाँ कजली। आज संध्या से ही मन अस्थिर है। विपत्ति को हँस कर टालना चाहता हूँ किन्तु सावन-भादों के काले कजरारे मेघों-सी वह घिरती ही आ रही है। बसावन !

बसावन : (पास जाकर हाथ जोड़कर खड़ा होता है।) जी सरकार !

चेत सिंह : अरे छोड़ हाथ जोड़ना। हाथ जोड़ते-जोड़ते तो चेत सिंह आज मर गया। उसकी कमर टूट गई। कहीं उसमें तन कर सीधे खड़े होने की शक्ति होती। कण्व के आश्रम में तपस्विनी-सी पालिता शकुन्तला और शिकार के लिये जंगल में भटकते दुष्यंत ने, आँख मूँद कर अपने को प्रकृति के हाथ में सौंप दिया। कहीं विवाह के मंत्र नहीं पढ़े गये, कहीं शहनाई नहीं बजी, कोई इस मिलन का साक्षी नहीं था। शकुन्तला ने थोड़े दिनों बाद भरत को जन्म दिया। इतना बड़ा भारत देश भरत के नाम पर गर्व से सीना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताने खड़ा है। कोई दुष्यंत शकुन्तला को कलंक नहीं लगा सका।

[दूसरी ओर से चेत सिंह की रानी का प्रवेश। उन्हें देख कर बसावन और कजली उठ कर खड़े हो जाते हैं। चेत सिंह का कंठ रुँध आया है। वह रानी को नहीं देख पाते। भावावेश में उठ कर बारजे के पास जाकर गंगा की ओर देखते हुए, खंभे का सहारा लेकर खड़े हो जाते हैं।]

चेत सिंह : (रुँधे कंठ से) लेकिन मेरी माँ कलंकिनी है गंगे। उसकी माँग में लाल सिंदूर नहीं काला सिंदूर चढ़ा था। उस के सुहाग की चन्द्रिका को पाप के राहु ने उसी दिन ग्रस लिया था। भरत के नाम पर भारत अमर है, चेत सिंह खुद तो डूब ही रहा है, अपने साथ काशी राज्य को भी ले डूबेगा। हे भगवान् !

(रानी पास जाती है और चुपचाप हाथ पकड़ कर खड़ी हो जाती है।)

चेत सिंह : (घूम कर देख कर) ओह, रानी। इस अभागे के साथ विवाह कर के तुम भी अपमानित हो रही हो। चेत सिंह तुम्हारे योग्य नहीं था रानी। इसे क्षमा करो।

रानी : कैसी बातें करते हैं आप ? नौकर-चाकरों के सामने ऐसी बातें कहनी चाहिये ? मेरा अपमान करने की क्षमता, आप के रहते किसमें है ?·········बसावन ! राजा जी को पान ले आ। कजली ! तू जा, सितार ठीक कर। मैं आती हूँ।

(बसावन और कजली प्रसन्नता से जाते हैं।)

चेत सिंह : हिन्दू नारी के मुँह से शायद यही बात शोभा देती है रानी। (आकर चौकी पर बैठ जाते हैं।) नारी की निष्ठा से पुरुष महान् नहीं होता, नारी स्वयं देवी की कोटि में जा बैठती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[दूर पर दो बार टन्-टन् घंटा बजता है।]

रानी : दो बज गये। आप के माथे में दर्द था, मैं जब तक माँ जी को प्रणाम करके आऊँ, तब तक आप उठ कर यहाँ चले आये। आप लेट जाइये, मैं माथा दबा देती हूँ।

[चेत सिंह तकिए पर अधलेटे-से सो जाते हैं। रानी उन के पीछे बैठकर माथा दबाने लगती हैं। क्षण भर शान्ति, फिर चेत सिंह रानी का हाथ पकड़ लेते हैं।]

चेत सिंह : लोग कहते हैं, चेत सिंह के राज्य में चोरी, डाका, हत्या और बलात्कार बहुत बढ़ गये हैं। वह राजा बनने के योग्य नहीं है। पाप की सन्तान और कैसी होगी ?

रानी : (तीव्र स्वरों में) चुप रहिये महाराज, मैं यह सब नहीं सुन सकती। मैं······

चेत सिंह : (बात काट कर) हः हः हः हः, सत्य का मुँह ऐसा ही डरावना होता है रानी। कलंक की सौ-सौ जीभें, विषधर सर्प की भाँति अपने शिकार को आगे बढ़ कर लपेट लेती हैं।·········(उदास स्वरों में) किसी में साहस नहीं जो समाज की लाल आँखों से बच जाय।

रानी : (दृढ़ स्वरों में) महाराज, मैं ठाकुर उमराव सिंह की कन्या हूँ। सब कुछ जान-सुन कर ही पिता जी ने आप के साथ विवाह पक्का किया था। भाँवरे फिर चुकने के बाद पति ही हिन्दू नारी का जप, तप, स्वर्ग और देवता होता है। आप की बातों से मेरे मन पर चोट लगती है महाराज ! फिर इस समय इन बातों की आवश्यकता क्या है, अपने मन से लड़ाई करने का यह समय नहीं है। आप फिरंगी लाट से लड़ने का उपाय करें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह : (हताश भाव से) क्या उपाय करूँ रानी ! मन की इस लड़ाई ने कहीं का न रखा। दिन-रात कलंक के गर्त में गिरता जा रहा हूँ। जन्म के समय ही जो कालिमा चारों ओर लिपटी उसने प्रकाश के सब मार्ग ही बन्द कर दिये। सगे-सम्बन्धी शत्रु हो गए, शुभचिन्तकों ने साथ छोड़ दिया। चेतसिंह अकेला रह गया और रह गया उसका मिटा हुआ अभिमान, लुटा हुआ गर्व, छिना हुआ दर्प।

[भावावेश में उठ कर टहलने लगते हैं। रानी पीछे-पीछे जाती हुई रुक जाती हैं।]

रानी : (दीप्त स्वर) अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है महाराज! मैं जो आप के साथ हूँ। आप के जीवन के अंधकार में प्रकाश की एक किरण-सी मैं जो चमक रही हूँ। मेरी ओर देखिए ! (चेत सिंह रुक कर एकटक रानी को देखते हैं) आप के साथ विवाह होने के कारण पिता जी के साथ लोगों ने उठना-बैठना, खाना-पीना बन्द कर दिया। मैं एक दम विद्रोही हो उठी। तब से आज तक विद्रोह की वह आग बुझी नहीं है। सुलग रही है······सुलग रही है और आप की रानी घुटने टेकने से घृणा करती है। उसे गिड़-गिड़ाने से नफ़रत है; उसे आँखों का पानी अच्छा नहीं लगता। कायरता के अंचल में मुँह छिपाने को वह मृत्यु समझती है। संघर्ष करते-करते मिट जाने को जीवन। वह विद्रोह को वरदान मानती है, मर जाने को अमरता। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है महाराज, एक बार साहस...

चेत सिंह : साहस ! किंतु निष्फल साहस का परिणाम क्या होगा रानी ? कुँए में कूद पड़ने को बुद्धिमत्ता कहती हो ? ज्वालामुखी के मुँह पर खड़े होने में वीरत्व का परिचय है ?·········जब-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब चेत सिंह ने सिर उठा कर चलना चाहा, उसे धूल में लोटने को बाध्य किया गया। उसके अहम् को कुचला गया, उसके अस्तित्व की चुनौती दी गई।

[बसावन तश्तरी में पान ले कर आता है, चेत सिंह के पास जाता है। चेत सिंह पान लेकर चौकी पर बैठ जाते हैं। बसावन तश्तरी रख कर चला जाता है।]

चेत सिंह : तुमने अभी थोड़ी देर पहले इस बसावन को नौकर कह कर हटाया था। नौकर होते हुए भी इसने एक दिन मेरे प्राण बचाये थे रानी! मैं इसका एहसान कभी नहीं भूल सकता।

रानी : (पास बैठ कर) मैंने उसे छोटा नहीं बनाया था महाराज! उसे बहुत मानती हूँ।

[नेपथ्य में सितार पर रात की धुन सुन पड़ती है। मंच पर कुछ क्षण शान्ति।]

चेत सिंह : यह सितार कहाँ बज रहा है रानी?

रानी : कजली होगी महाराज! सोने के पहले रोज़ थोड़ी देर सितार बजाती है। वह मेरी दासी ही नहीं, साथिन भी है। बचपन से तो मेरे साथ है।

चेत सिंह : बचपन से तुम्हारे साथ है? बचपन से तो मेरे साथ भी बहुत से लोग थे रानी! आज कहाँ हैं वह सब?...... हाँ, दासी हो तो ऐसी हो! कजली के हाथ बहुत सधे हुए हैं। अच्छा, एक बात बताओ रानी! स्त्री नौकर रखती है, उसके साथ घर में अकेली भी रहती है, कोई कुछ नहीं कहता। पुरुष नौकरानी रखता है तो लोग उस पर संदेह क्यों करते हैं?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी : लोग उस पुरुष पर संदेह नहीं करते, अपने मन के पाप को सामने रखते हैं महाराज ! लेकिन इस बात का बसावन से क्या सम्बन्ध ?

चेत सिंह : बसावन से ? बसावन सेतो। कोई सम्बन्ध नहीं है । योंही, एक ख़्याल आ गया।

(आँधी की तरह सुजना सिंह का प्रवेश)

सुजान सिंह : भैया ! (रानी को देख कर) ओह, भाभी भी यहाँ हैं।

(रानी चेत सिंह के पास से उठने लगती हैं, चेत-सिंह रोक देते हैं ।)

रानी : (फिर बैठ कर) क्या बात है सुजान बाबू ? आँखें क्यों लाल हैं ?

चेत सिंह : महाराज उनकी बात पर चल कर अपना गला नहीं कटवाते, इसीलिये । (हँस कर) सुजान, रात बीत रही है । जाओ सो रहो ।

सुजान सिंह : (छोटी चौकी पास खींचकर उस पर बैठ जाते हैं ।) नहीं महाराज, यह हँसी का समय नहीं है । आँखें क्या योंही लाल हैं भाभी ? पूछिये इनसे, बाबू औसान सिंह को पाँच हज़ार की जागीर इन्होंने क्यों दी ?

चेत सिंह : (हँस कर) अरे, मैंने दी कहाँ पागल ? वह तो देनी पड़ी । अँग्रेज़ों ने गला दबा कर दिलवाई ।

रानी : (तीव्र स्वर में) और आप ने नाक रगड़ कर दे दी महाराज ? ओह, आप कितना नीचे गिरते जा रहे हैं ? अन्त में एक दिन.........

चेत सिंह : (बात काट कर एकदम उठ कर खड़े हो जाते हैं ।) चेत सिंह की कायरता और दुर्बुद्धि काशी राज्य को ले डूबेगी, यही न ! इसके बाद ? इसके बाद चेत सिंह अपने पीछे एक काला धुआँ छोड़ जायगा जिसमें सब कुछ आँखों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ओझल हो जायगा । कहाँ रह जायगा काशी का गौरव, कहाँ रह जायगी उसकी परम्परा, कहाँ रह जायगा बड़े महाराज का स्वप्न और········(बारजे के पास जाकर बाहर देख कर) और कहाँ रह जायगी भगवती भागीरथी की लहरों में खेलती हुई यह पवित्रता ? क्या चाहते हो तुम लोग ? इस छलकते हुए संगीत का गला घोंट दूँ ? इन लहरों को रक्त से लाल कर दूँ ?

रानी : (वैसे ही तीव्र स्वर में) स्वतंत्रता की देवी यदि रक्त-स्नान करना चाहती है तो वही हो महाराज ! (पास जाकर) सम्मान की वेदी पर यदि नर-मुण्डों की माला चढ़ानी पड़े तो महाराज चेत सिंह को पीछे नहीं हटना चाहिए । वह क्षत्राणी माँ के पुत्र हैं, माँ की कोख की लाज उन्हें रखनी होगी । रखनी होगी । रखनी होगी । इसमें समूची काशी श्मशान बनती है तो बन जाय ।

चेत सिंह : (रानी के दोनों कंधों पर हाथ रख कर गंभीर स्वर में) तुम प्रसन्न कर देने वाली बात कह रही हो रानी । एक बार नसों में फिर से गर्म रक्त बहना चाहता है······पर ······पर गले तक डूब चुका हूँ रानी । (हाथ हटाकर टहलते हुए) अब उबरने का कोई उपाय नहीं है । कौन मेरा साथ देगा ? सब तो छोड़ गए ! बाबू औसान सिंह···

सुजान सिंह : (औसान सिंह के नाम पर क्रोध से) मिट्टी ढोने वाले एक मज़दूर की इतनी स्पर्द्धा ! बड़े महाराज, राजमाता और आपने उनके लिए क्या नहीं किया भैया ? गोशाला में काम करते-करते ऊँचा उठाकर आपने उन्हें दीवान बनाया । उसका बदला उन्होंने यह दिया । साथ बैठकर खाने की बात को लेकर, जाति जाने का झूठा घमंड लेकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने आपके प्राण लेने की चेष्टा की। यह है धर्म का खोखला दंभ जो हृदय को सुखाकर मरुभूमि बना डालता है।

चेत सिंह : जीवन भर के प्रेम और सौन्दर्य को जो कृपाण की धार पर भेंट चढ़ा देता है सुजान! यही तो रानी से कह रहा था; उस दिन बसावन न होता तो मेरा क्या होता, जानती हो? तुम्हारे माथे का यह सिन्दूर पुँछ गया होता, चूड़ियाँ फूट जातीं, तुम्हारा सुहाग उजड़ गया होता।

रानी : **(करुण स्वरों में चेत सिंह के मुँह पर हाथ रख कर)** चुप रहिए महाराज, जो हो गया सो हो गया।

सुजान सिंह : नहीं भाभी, उसी दिन से तो भैया के भाग्याकाश पर विपत्ति के बादल मँडराने लगे।···गद्दी पर बैठने के बाद भैया ने चाहा कि एक भोज करके सबके साथ बैठकर खाँय। सबने खाया, पर रानी गुलाब कुँवर और बाबू औसान सिंह ने इसमें अपनी हेठी समझी। बाबू औसान सिंह ने इतना बुरा माना कि भीम सिंह के हाथों भैया को मरवाने का षड्यंत्र रचा।

चेत सिंह : कैसा कुचक्र था वह रानी! पान देते समय बसावन ने मुझ से कहा—सरकार, बाबू औसन सिंह का नौकर सिगाली कह रहा था कि बाबू औसान सिंह ने रिसालदार भीम सिंह को सरकार की जान लेने के लिए तैनात किया है। मुझे विश्वास नहीं हुआ। पर अन्दर ही अन्दर मैं डर गया। रातों रात मीर गुलामअली और बख़्शी सदानन्द को बुलाकर राय की। सदानन्द जी ने औसान सिंह का घर घेर लेने की सलाह दी और सिपाही भेज दिये।

सुजान सिंह : पर औसान सिंह को ख़बर लग गई और वह जल्दी से पीछे के दरवाज़े से भाग निकले भाभी। तब के गए-गए अब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज़ों से मिलकर जागीर लेने आए हैं। उफ़, लोग कहते हैं न, साँप को दूध पिलाकर पालना। जब घर के लोग ही विभीषण बन जाँय तब क्या हो?

[दूर पर चार बार टन्-टन्-टन्-टन् घण्टा बजता है। गाने के स्वर आते हैं।]

शरण तुम्हारी हे त्रिपुरारी।
विश्वम्भर तुम, नीलकंठ तुम, शंकर तुम, तुम भवभयहारी।
विश्वनाथ वरदायी, सुर-नर-मुनि सेवित औघड़, सुखकारी॥

[जब तक गाना होता रहता है मंच पर शान्ति रहती है। सब मोहाविष्ट-से जहाँ के तहाँ स्थिर रहते हैं। गाने की समाप्ति पर चेत सिंह भग्न स्वरों में कह उठते हैं।]

चेत सिंह : गायन के स्वर बुझते हुए मन में आशा का संचार कर रहे हैं सुजान!

सुजान सिंह : **(प्रसन्न होकर)** सच भैया! आप सच कह रहे हैं?

चेत सिंह : हाँ सुजान, यह स्वर राख के नीचे दबी हुई चिनगारी को भभक उठने की प्रेरणा दे रहे हैं। पुकार-पुकार कर कह रहे हैं चेतसिंह, जीवन भर धुँआ देते हुए जलते रहने की अपेक्षा एक बार भभक कर बुझ जा। यह कहीं अच्छा। बाबा विश्वनाथ भवभयहारी हैं, फिर भय कैसा?

रानी : **(पास आकर प्रसन्नता से चेतसिंह से सट कर खड़ी होती हैं)** महाराज, मैं धन्य हुई। आपने मेरे मुँह की लाली रख ली। मेरे विद्रोह को आपने बल दिया महाराज! हार जाने में दुःख नहीं है, दुःख है हार के भय से मुँह छिपा कर बैठ रहने में। आज मैं कितनी सुखी हूँ।...कितनी सुखी हूँ।

चेत सिंह : **(रानी का हाथ पकड़ कर सुजान सिंह के पास आकर)** सुजान, तुम्हारी भाभी चेत सिंह के जीवन में भैरवी बन कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई है। इसकी नसों में उन माँ-बहनों का रक्त प्रवाहित है जो हँसते-हँसते अपने पतियों और भाइयों को रणचण्डी के चरणों पर बलि चढ़ा देती थीं। और रानी......... (सुजान की ओर देखकर) तुम्हारा यह पागल देवर लक्ष्मण और भरत की भक्ति रखता है। (दोनों के मस्तक पर हाथ रख कर) तुम दोनों मुझे प्रकाश दो। चेत सिंह काशी को बचा नहीं सकता। उसके हाथों में शक्ति नहीं रह गई है। उसके तलवार की धार कुंठित हो गई है। उसके जीवन पर कलंक की चादर लिपटी हुई है। पर मिटते-मिटते उसे यही सन्तोष हो कि उसने कायरता के अंचल में मुँह नहीं छिपाया। अपनी आँखों से काशी की हरी-भरी धरती में आग लगते नहीं देखा।

[तेज़ी से राजमाता पन्ना और मनियार सिंह का प्रवेश। मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ता है।]

राजमाता पन्ना : बेटा, यह मनियार क्या कह रहा है ? तुझे फिरंगी क़ैद करेंगे ? बाबा भोलेनाथ ! क्या होने वाला है, प्रभो ?

रानी :
सुजान सिंह : } क़ैद !

चेत सिंह : (एक दम शान्त रहते हैं।)

मनियार सिंह : सच कह रहा हूँ राजमाता। सुनकर आँखों में ख़ून उतर आया। राज न पाने के दुःख से लखनऊ चला गया था, वहाँ चेत सिंह का पत्र मिला कि काशी पर विपत्ति आई है। यह मान करने का समय नहीं था, राजमाता ! सोचा कि चल कर एक बार फिरंगियों को तलवार का जौहर दिखा दूँ। वह भी जान लें कि काशी की तलवार का पानी अभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकदम मर नहीं गया है। लेकिन यह तो पीठ में पीछे से छुरी भोंकना है।

राजमाता पन्ना : (रुँधा कण्ठ) मेरे कलेजे का टुकड़ा बन्दी होगा ? मेरी आँखों के सामने ? हा भगवान् , आज यह दिन भी देखना पड़ा। पन्ना का दर्प तुमने यों मिट्टी में मिला दिया ? (........चौकी पर बैठकर आँचल से मुँह ढँक कर रोने लगती हैं।)

रानी : (पास जाकर) यह माँ की ममता दिखाने का समय नहीं है बड़ी माँ ! विपत्ति की यह काली घटा माँ के ममता की बरसात से नहीं डरेगी।

राजमाता पन्ना : तू भी इतनी कठोर हो गई रे ? तेरी आँखों में भी आँसू नहीं रह गए ? एक मैं ही पीपल के पत्ते की तरह डोल रही हूँ।

रानी : मेरे हृदय में क्या हो रहा है, यह कैसे बताऊँ माँ ? अपमान के घूँट पीकर भी मैंने इन्हें बल दिया है। यह आँसू महाराज का अनिष्ट करेंगे।

राजमाता पन्ना : (क्षण भर रुक कर और सोच कर, आँसू पोंछ कर) ना, अपने लाल का अनिष्ट नहीं होने दूँगी। लोग यह न कहें कि पन्ना के आँसुओं ने चेत सिंह को कायर बना दिया। बहू ! (रानी के मस्तक पर हाथ फेर कर) तेरा सुहाग मेरे आँसुओं से मलिन न हो।

रानी : यही आशीर्वाद करो माँ कि तुम्हारी कोख की लाज बनी रहे। यह अन्याय के सामने सिर न झुकायें, यही वरदान दो। राजपूतनी माँ का दूध अपने को कलंकित न करे। मैं महाराज के जीवन में नूपुरों का बन्धन बन कर नहीं, कण्ठ की विजयमाल बन कर रह सकूँ। इनकी प्रेरणा बन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर जियूँ। इनके मार्ग की बाधक न बनूँ। मेरे सुहाग का दीप अखण्ड रहे, धूमिल न हो। यही आशीष दो माँ!

राजमाता पन्ना : रोएँ-रोएँ से आशीष झर रहा है बेटी, पर······पर मेरा लाल क़ैद हो जायगा तो क्या होगा? मैं जिऊँगी कैसे?

चेत सिंह : **(जो अब तक चुप थे, एकदम बोल पड़ते हैं।)** जिओगी माँ, जिओगी। अगर चेत सिंह क़ैद हो गया तो उसकी कायरता का विष पीकर जीना। अपने कलंकित कोख की कालिमा लेकर जीना। यह याद लेकर जीना कि तुमने ऐसे कपूत को जन्म दिया जिसे तुम्हारे और **(बलवन्त सिंह के चित्र की ओर संकेत कर)** पिता जी के चरणों की धूल भी महान् नहीं बना सकी। जिस चेत सिंह के जन्म पर लोगों के मुख पर मुस्कान की जगह घृणा की रेखाएँ उभर उठीं, वह चेत सिंह मृत्यु में भी घृणा का अँचल नहीं त्याग सका। कलंक का ही कफ़न उसे मिला। यह देखकर जी सकोगी माँ!

राजमाता पन्ना : (चीख़ कर) बेटा, मेरे लाल! **(रो देती हैं।)**

चेत सिंह : छिः माँ! क्षत्राणी माँ की आँखों में यह आँसू शोभा नहीं देते। चेत सिंह गहरी नींद में सो रहा था, अब वह जाग गया है। उसने माँ की ज्वाला, पत्नी की प्रेरणा और भाई की शक्ति का मूल्य पहचान लिया है। अब उसे नीचे न गिराओ। वह स्वयं मिट जायगा। मिट जायगा तब भी पन्ना अमर रहेगी। माँ अमर रहेगी। काशी के इतिहास में घृणा की यह कहानी अमर रहेगी। बाबू मनियार सिंह!

मनियार सिंह : कहिए महाराज!

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह : फिरंगी लाट चेत सिंह को क़ैद करेगा । अच्छी बात है । मैं कल ख़ुद उससे एक बार मिलूँगा । देखूँ, उसे क्या कहना है । तुम चलने का प्रबन्ध करो । मैं जानता हूँ, चेत सिंह के शरीर पर उसे लोभ नहीं है, उसे रुपया चाहिए । माँ, तुम्हारे अमल धवल वैधव्य की शपथ है, चेत सिंह अपना काला मुँह तुम्हें दिखाने फिर नहीं आयेगा । चलो बाबू मनियार सिंह, आओ सुजान । बख़्शी जी और ग़ुलामहुसेन को बुला लो । परामर्श करना होगा । समय कम है चेत सिंह को बन्दी करेगा ! हुँः ।

[मनियार सिंह और सुजान सिंह के साथ आगे बढ़ते हैं । एक ओर रानी खड़ी हैं । उनके पास ठिठकते हैं । राजमाता 'बेटा चेत सिंह' कहकर चीख़ कर मूर्छित हो जाती हैं ।]

चेत सिंह : (मुड़ कर राजमाता को देख कर, फिर रानी से) माँ का हृदय पत्थर नहीं होना चाहता रानी, बाँध तोड़ कर बह निकलना चाहता है । उन्हें देखना । और तुम तो मेरे जीवन की भैरवी हो, दुर्गा हो, शक्ति हो । तुम्हारी प्रेरणा मुझे शक्ति देती रहे, भगवान् भूतनाथ से यही वर माँगो ।

रानी : (चेत सिंह के पाँवों पर झुक कर, ऊपर आँखें उठा कर) जाओ देवता, तुम्हारी रानी के नेत्रों के आँसू तुम्हारा चरण पखार रहे हैं । उसके आशंकित हृदय की प्रत्येक धड़कन तुम्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही है । यह प्रेम पर कर्त्तव्य की विजय है, आँसू पर आग की विजय है । भगवान् मेरा गर्व मिटने न दें; यही वरदान दे जाओ स्वामी ! भगवान् भूतनाथ तुम्हारा पथ मंगलमय करें ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह : (रानी को उठाकर) इतिहास के पृष्ठों में तुम अमर रहोगी रानी । चेत सिंह के कलंक को गोद में दबाये धवल यशश्चन्द्रिका-सी ।.........

[नेपथ्य में दो-तीन बार 'हर-हर महादेव' का घोष । रानी झुक कर चेत सिंह का पाँव छूती हैं, वह उसका मस्तक थपथपा कर जल्दी से बाहर जाने लगते हैं । सुजान सिंह और मनियार सिंह भी जाते हैं । रानी उठ कर आँचल से आँखें पोंछती हैं, फिर राजमाता के पास आकर बैठ जाती हैं । उनके मुँह पर हवा करती हैं । नेपथ्य में शहनाई पर प्रभाती बज रही है । पर्दा मिलता है ।]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय दृश्य

[काशी में शिवालय घाट पर बाबू बैजनाथ सिंह की हवेली। समय दिन के लगभग ग्यारह बजे। मंच के दोनों पार्श्व की दीवारों पर कक्ष का आभास देने वाली चित्रकारी और दोनों ओर एक-एक द्वार जिन पर पर्दे पड़े हैं। बीच की दीवार में भी एक द्वार, चौखट के आगे दो-तीन सीढ़ियाँ। ऊपर बारजा निकला देख पड़ता है जिसके दोनों ओर खिड़कियाँ हैं। बारजे से एक सीढ़ी घूम कर नीचे तक आती है। सीढ़ी जहाँ नीचे समाप्त होती है वहाँ बाईं ओर एक बड़ी खिड़की है। उसके नीचे एक बड़ी चौकी रखी है। पर्दा धीरे-धीरे हटता है। नेपथ्य में सारंगी पर धुन बजती रहती है। कजली बैठ कर पान लगाती देख पड़ती है, उसके चारों ओर पानदान आदि बिखरे पड़े हैं। बसावन ऊपर बारजे पर झाड़ू लगा रहा है। कजली पान बनाते-बनाते तन्मय भाव से गाती जा रही है।]

कजली : झूला पड़ा कदम की डारी, झूलें कृष्णमुरारी ना। छाई घटा घनघोर अटा पर कारी कारी ना, हो, झूला पड़ा कदम की···

बसावन : (बारजे पर से नीचे झाँक कर) हे झूला वाली, तोहके कुछ खबर हौ कि नाहीं ? महाराज न आवत होइहैं ! इहाँ कासी क राज हेरात हौ, तोहके झूलै क पड़ल हौ !

कजली : (ऊपर देखती हुई) देखऽ बसावन, जब हम काम करत रहीं त हम के छेड़ल जिन करऽ। जनलऽ। तू आपन काम देखऽ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसावन : (ठण्डी साँस लेकर) अरे, हम त आपन काम देखतै हई महारानी !
(कजली एक पंक्ति फिर गा कर एक पान बना कर अपने मुँह में रख लेती है ।)

बसावन : (ऊपर से देख कर, झाड़ू हाथ में लिये सीढ़ी से नीचे उतरता है ।) कैसन अकेले-अकेले पान कचरत हऊ कजरो । अरे, तोहरे गटई में पिपिहरी न बँधल होत त बाबू बसावन सिंह गवरनर जन्डैल शाहब बहादुर टुम को पचाश लाख रूपिया जुरमाना करना माँगटा हय । टुम डेना माँगटा हय ?

कजली : (डर कर) हाय राम ! पचास लाख रूपया जुरमाना ! हे बसावन, महाराज एतना रूपिया दे देइ हैं ओह लाल मुँह वाले के ?

बसावन : (गम्भीर होकर) महाराज तो अब एक्को पाई न देइ हैं, कौनो खेलवाड़ हौ ? काहे दें महाराज ? फिरंगी के लड़े के होय त अपने घरे से रूपिया लै आवै ।

कजली : हम का जानी बसावन ? हम के त रानी जी कहलिन कि कजरी, सिवाला बाट चल जो ! महाराज उहाँ अकेले रहि हैं, मुँह बोलारो के बदे कोई चाही । महाराज लड़ै जात हउअन, हम चल अइली । पर भित्तर से डर लगत हौ बसावन, का होई । तोहऊँ लड़बऽ ।

बसावन : लड़ब न त का महाराज के अकेले छोड़ देब ? जहाँ महराज का पसीना गिरी उहाँ बसावन क खून गिरी । तुम डरती काहे को है ?

कजली : का करी बसावन, औरत क जात !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसावन : औरत त रानी जी भी हइन, उनके देख ऽ। जैसे साच्छात काली माता ! उन कर बस चलै त फिरंगी के कच्चै खाय जायँ ।

कजली : भगवान करैं, रानी जी क सोहाग अचल होय, अउर का कहीं हम । महाराज जुग-जुग जियैं ।

बसावन : (एक पाँव पर खड़े हो कर अभय देने की मुद्रा में) और भगवान करैं, तुम्हरा भी सुहाग अचल होय। बाबू बसावन सिंह जुग-जुग जियैं । दूधों नहायँ, पूतों फलें ।

[दोनों ठहाका मार कर हँस पड़ते हैं। इसी समय एक द्वार का पर्दा हटा कर मीर गुलाम हुसेन और बख़्शी सदानन्द बातें करते प्रवेश करते हैं। कजली और बसावन दोनों सहम जाते हैं। कजली जल्दी से पान का सामान एकत्र कर के भागती है। बसावन झाड़ू लेकर फिर ऊपर चढ़ जाता है। सदानन्द जी भारी भरकम व्यक्ति हैं, धोती और लम्बा कोट पहने हैं, सिर पर पगड़ी है। मीर ग़ुलाम हुसेन की मुस्लिम वेश-भूषा है पर सिर पर उनके भी पगड़ी है।]

ग़ुलाम हुसेन : तो यह अफ़वाह सच है बख़्शी जी कि हमारे महाराज ने बक्सर में गवर्नर जनरल के क़दमों पर अपनी टोपी रख दी थी और काशी का राज ले लेने और जान छोड़ देने की बात कही थी ?

बख़्शी सदानन्द : सच है मीर साहब !

ग़ुलाम हुसेन : ओह, कितनी बड़ी तौहीन है महाराज की ! इस ज़िल्लत की ज़िन्दगी से कहीं अच्छा है कि महाराज राजपाट सब छोड़कर साधू हो जायँ । आज बड़े महाराज होते तो......

बख़्शी सदानन्द : तो फ़िरंगी को काट कर धर देते, यही न ! पर मीर साहब, हाथ की सब उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं । महा-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज बलवन्त सिंह और चेत सिंह एक ही धातु के नहीं बने हैं। महाराज चेतसिंह दुर्बल तन लेकर ही नहीं, कमज़ोर मन लेकर भी पैदा हुए थे। उस पर बचपन से ही ऐश-आराम का जीवन बिताने की आदत पड़ गई। बड़े महाराज ने पहचान लिया था कि इस पौधे में आँधी सहने की ताक़त नहीं है। तभी वह बाबू मनियार सिंह को राज्य देना चाहते थे।

ग़ुलाम हुसेन : यह तो आप ठीक कहते हैं बख़्शी जी। महाराज चेत सिंह ने फूलों का लाल रंग ही देखा, ख़ून का लाल रंग नहीं देखा।.........पर बाबू मनियार सिंह आदमी जीवट के हैं! दो सौ बन्दूक़ची लिये इस वक्त भी नीचे घाट पर छिपे हुए हैं। उनकी तलवार म्यान से बाहर आने को बेक़रार है।

बख़्शी सदानन्द : उनकी तलवार का पानी देखने का अवसर नहीं आयेगा मीर साहब! उनके हाथों की शक्ति मैं जानता हूँ पर इस समय शक्ति की नहीं, कौशल की आवश्यकता है।

ग़ुलाम हुसेन : आख़िर क्यों बख़्शी जी, आप लड़ाई से भागते क्यों हैं? शुरू से ही देख रहा हूँ, आप लड़ाई नहीं होने देना चाहते! जब कभी मौक़ा आता है, आप तरह दे जाते हैं। आख़िर क्यों?

बख़्शी सदानन्द : (गंभीर भाव से चुप रहते हैं।)

ग़ुलाम हुसेन : बोलिये बख़्शी जी, अब चुप रहने से काम नहीं चलेगा। आप लड़ाई से डरते हैं?

बख़्शी सदानन्द : लड़ाई से नहीं डरता मीर साहब, पर अपने आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह कटवाने से मुझे नफ़रत है। जिस लड़ाई से कुछ हासिल नहीं होना है, उसमें ख़ून

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाने से फ़ायदा ही क्या है ? हाँ, महाराज सिन्धिया की सेना और फ़ैजाबाद से बेगमों की कुमुक ठीक समय पर आ जाय तो कुछ भरोसा हो सकता है। आपने प्रजा के रुख़ का कुछ पता लगाया ?

गुलाम हुसेन : प्रजा इस वक्त बारूद का ढेर हो रही है। काशी नगरी का बच्चा-बच्चा महाराज चेत सिंह के लिए पहरे का सिपाही बन गया है। मातायें भगवान से महाराज के लिए हिफ़ाजत का हाथ माँग रही हैं, बहनें भाई चेत सिंह के लिए जीत की दुआ माँग रहीं हैं। एक चिनगारी दिखाने की देर है बख़्शी जी, बाग माधोसिंह की छावनी पल भर में फुँक कर राख का ढेर हो जायगी।

बख़्शी सदानन्द : और आपके दोस्त मौलवी अलीउद्दीन कुबरा का क्या रुख है ?

गुलाम हुसेन : (बिगड़ कर) देखिये बख़्शी जी, मैंने आप से पचास बार कह दिया कि मुझे ऐसा मज़ाक पसन्द नहीं है। वह ग़द्दार है, गद्दार। जो अपने राजा का न हुआ वह आदमी नहीं है, हैवान है। उसके नाम पर सौ बार लानत भेजता हूँ। थू !

बख़्शी सदानन्द : ऐसा नहीं, मीर साहब ! अभी धरती वीरों से ख़ाली नहीं हुई है। अगर आप के धर्म में अलीउद्दीन कुबरा और मुन्शी फ़ैयाजअली जैसे ग़द्दार हैं तो हमारे यहाँ भी शम्भूराम पण्डित, बेनीराम पण्डित और बनकट मिश्र जैसे राज्य के शत्रु हैं। राज्य जायगा तो बाबू औसान सिंह जैसे भलेमानुसों के कारण जायगा। बाबू ननकू सिंह जैसे गुन्डों के कारण नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाम हुसेन : पैदा होते ही इनकी माताओं ने इनका गला क्यों नहीं घोंट दिया? जानते हैं बख़्शी जी, उस कमीने कुबरा ने रानी गुलाब कुँवर से कहलाया है कि उन्हें अगर राज लेना हो तो गवर्नर जनरल के हुज़ूर में आकर दरख़्वास्त करें

बख़्शी सदानन्द : और हमारे बेनीराम पण्डित हेस्टिंग्स को अपने यहाँ बाँसफाटक वाले मकान में ठहराने को तैयार हैं। जाने दीजिये मीर साहब, यह सब तो निमित्त मात्र हैं। राज को तो अब जाना ही है। बाबा कीनाराम की वाणी व्यर्थ नहीं होगी। महाराज चेत सिंह इस घहराती घटा को बरसने से रोक नहीं सकते।

[नेपथ्य में कजली के गाने के स्वर "गजरा गूँथे री मालिनियाँ, बेला भारी भारी ना। छाई घटा घनघोर अटा पर कारी कारी ना, हो, गजरा गूँथे री मालिनियाँ बेला भारी भारी ना।" गाने की समाप्ति पर चेत सिंह का स्वर, "कजली, बख़्शी जी और मीर साहब तो नहीं हैं नीचे ?" कजली का उत्तर "हैं सरकार। बसावन से बोलवाय भेजीं ?" चेत सिंह का स्वर "नहीं, मैं ख़ुद जाता हूँ।"]

गुलाम हुसेन : महाराज बाग़ माधो सिंह से लौट आए। पता नह क्या हुआ ?

बख़्शी सदानन्द : होना क्या है मीर साहब। हेस्टिंग्स ने महाराज के आगे घुटने नहीं टेके होंगे, यह तय है।

[ऊपर चेत सिंह देख पड़ते हैं। क्षण भर रुक कर अस्थिर गति से, चिन्तामग्न, सीढ़ी से नीचे उतरते हैं और आकर चौकी पर बैठ जाते हैं। तलवार निकालकर बगल में रख लेते हैं और दोनों हाथों से मुँह ढाँप कर "ओह" कह उठते हैं। थोड़ी देर शांति रहती है।]

गुलाम हुसेन : (संभ्रम से पास जाकर) क्या हुआ महाराज ?

चेत सिंह : यह पूछो कि क्या नहीं हुआ मीर साहब ! फिरंगी लाट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने तुम लोगों के राजा से मिलना भी अस्वीकार कर दिया। राजा उसके द्वार पर भिखारी की तरह खड़ा रहा पर वह भीख देने भी बाहर नहीं आया। यह है तुम्हारे महाराज की इज्ज़त !

गुलाम हुसेन : (तीव्र रोष से) अब हद हो गई बख्शी जी ! यह ज़लालत अब नहीं सही जाती। महाराज, हेस्टिंग्स कुछ सिपाहियों के साथ बाग़ माधोसिंह में अकेला है। मैं अपने सिपाहियों को हुक्म देता हूँ कि वह छावनी घेर लें और फिरंगी को क़ाबू में कर लें। फिर देखा जायगा। (**नेपथ्य में हर-हर महादेव का घोष।**) बाबू मनियार सिंह के साथ भी दो सौ सिपाही हैं। मैं चला महाराज ! अल्लाह जानता है, मेरे कलेजे में आग लगी हुई है। (**चलता है**)

बख़्शी सदानन्द : मैं जानता हूँ मीर साहब, पर आप ठहरिए। अभी यह सब कुछ नहीं होगा। अभी एक कोशिश और करनी होगी। महाराज, मैं कुबरा को बुलवाता हूँ। आप उससे एक बार और सुलह की बातचीत हेस्टिंग्स से चलाइये।

चेत सिंह : बख्शी जी। क्या अपमान का प्याला पूरा नहीं भरा ? अब भी कुछ शेष है ?

बख़्शी सदानन्द : (**चेत सिंह की बात पर ध्यान न देकर**) बसावन ! अरे बसावन !

[**नेपथ्य में 'आवत हई सरकार' कह कर बसावन आता है।**]

बख़्शी सदानन्द : देखो, बाबू सुजान सिंह से कहो कि अलीउद्दीन कुबरा को जैसे भी हो, महाराज के पास बुलवायें।

बसावन : अच्छा सरकार। (**जाता है।**)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाम हुसेन : मैं ख़ुद जाता हूँ बख़्शी जी ! उस ग़द्दार के दरवाजे पर भीख माँगूँगा। अपने राजा के लिए यह भी करूँगा। (तेज़ी से निकल जाते हैं।)

चेत सिंह : लेकिन हर बात की सीमा होती है बख़्शी जी ! यह अपमान······

बख़्शी सदानन्द : (गंभीर स्वर में) आप हार मान रहे हैं महाराज।

चेत सिंह : चेत सिंह परास्त होना नहीं जानता बख़्शी जी। उसके पीछे माँ की प्रेरणा, भाई की वीरता और पत्नी की शक्ति है। किन्तु उसकी विजय का आधार दुर्बल होता जा रहा है। उसके पराक्रम के झंझावात को कायरता मुँह चिढ़ा रही है। उसके पुरुषत्व की कठोरता विचलित हो रही है। भगवान विश्वनाथ के ताण्डव के स्वर प्रजा के मुख से मिटती हुई मुसकान के आगे हतप्रभ हो रहे हैं। (करुण स्वर में) हम यहीं, शिवालय घाट में, क़साई की छुरी के आगे तड़पती गाय की तरह घुटते रहें और वारेन हेस्टिंग्स हमारी हरी-भरी काशी नगरी को रौंद कर, तहस-नहस कर चला जाय ?

बख़्शी सदानन्द : महाराज, आप अधीर न हों। बाबा विश्वनाथ की दया और इस सेवक की बुद्धि पर भरोसा रखें।

चेत सिंह : क्या भरोसा रक्खूँ बख़्शी जी। आपके ऊपर भरोसा रख कर ही तो दो वर्षों से पाँच लाख रुपया साल भरता चला आ रहा हूँ। फिर भी तो फिरंगी के पेट की ख़न्दक नहीं भरी। बोलिए बख़्शी जी, राजपूतनी माँ के गर्भ से जन्मे चेत सिंह की तलवार क्या म्यान में ही धरी रह जायगी ? क्या इसी दिन के लिए स्वर्गीय महाराज बलवन्त सिंह के बाद मैं काशी नगरी और बाबा विश्वनाथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मन्दिर पाकर फूल रहा था ? (उत्तेजित होकर) आज स्वतंत्रता विदेशी लूटने जा रहे हैं और आप हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने को कहते हैं ?

बख़्शी सदानन्द : महाराज, काशी राज्य की नसों में अब भी यौवन थिरक रहा है। आप अधीर न हों।

चेत सिंह : कैसे न अधीर होऊँ बख़्शी जी, सब कुछ तो चला गया। बनियों के हाथ से अपमान पर अपमान सहे, ठोकरें मिलीं, गला दबाकर जब चाहा उसने रुपये वसूल किए और हम केवल क़ागज़ी घोड़े दौड़ाते रहे। कर कुछ न सके। (फिर कण्ठ रुँध जाता है) बुझते हुए काशी राज्य की अन्तिम दीप-शिखा-सा मैं एक बार भभक उठना चाहता हूँ बख़्शी जी ! स्वतंत्रता देवी के चरणों में इस अभागे चेत सिंह के बलिदान से ही शायद भारत के भाग्य का सूर्य मुस्कुरा उठे।

बख़्शी सदानन्द : जैसी महाराज की इच्छा, पर अभी उसके लिये समय नहीं आया है।

चेत सिंह : समय कब आयेगा बख़्शी जी ? जब काशी की गलियों में लोग चेत सिंह का नाम लेकर थूकने लगेंगे ? जब भारत देश की जनता चेत सिंह का नाम ले-लेकर घृणा से मुँह फेर लेगी ? जब स्वाधीनता की देवी अपना क्षत-विक्षत तन लेकर रो-रोकर कहेगी—'यह है चेत सिंह,जिसने फ़िरंगी के हाथों मुझे बेच दिया।' जब स्वर्गीय महाराज स्वर्ग से चीख़ उठेंगे—'कुल कलंक चेत सिंह,तू पैदा होते ही क्यों नहीं मर गया ? अच्छा हुआ तेरे जन्म पर राज्य में मंगल नहीं मनाया गया। नहीं बख़्शी जी, चेत सिंह कायरता की गहरी नींद में सोना चाहता था पर भाई और पत्नी ने उसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झकझोर कर जगा दिया है। अब आप उसे अधम न बनाइये। भविष्य के इतिहासकार उसे कभी क्षमा नहीं करेंगे।

बख़्शी सदानन्द : मेरा निवेदन है कि महाराज अभी स्वयं ऐसा कुछ न करें जिससे विपत्ति एकबारगी घहरा पड़े। स्वर्गीय महाराज और उनके परिवार की सेवा में ही अब तक रहा हूँ, आज क्या महाराज को मेरा इतना भी विश्वास नहीं रह गया है? **(पास जाकर)** जिस दिन शिवालय घाट के इस मकान में मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा हुई थी उस दिन की बात भूल गए महाराज? बाबा कीनाराम ने क्रुद्ध होकर कहा था—काशी का राज्य फिरंगियों के हाथ में चला जायगा। आप विश्वास न करें पर मैं देख रहा हूँ कि बाबा की वाणी सत्य होकर रहेगी। महाराज चेत सिंह विदेशी सत्ता की जड़ जमने से रोक नहीं सकते, एक रुकावट भर डाल सकते हैं। शायद महाराज के चुप रहने में ही इस समय हमारा कल्याण हो।

चेत सिंह : कल्याण? महाराज नन्दकुमार ने यही कल्याण साधन करते-करते चुपचाप फाँसी लगवा ली। अवध के नव्वाबों ने इसी कल्याण की आशा से फिरंगी के बूटों के नीचे अपने सीने बिछा दिये। सिराजुद्दौला का कैसा कल्याण हुआ? मीरक़ासिम ने भी अपने कल्याण का रास्ता देख लिया। फिरंगी के बूटों की ठोकर खाकर भी हम उन्हें सहलाते रहें तो जरूर हमारा कल्याण होगा। हे भगवान्!

बख़्शी सदानन्द : यह मेरा निवेदन है, अनुरोध है। बस, इस बार मेरी बात मान लीजिये, फिर आप स्वतन्त्र हैं।

चेत सिंह : फिर कैसी स्वतंत्रता बख़्शी जी? देश को फिरंगी के हाथ बेच देने की? जननी जन्म-भूमि को विदेशी के हाथ सौंप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने की ? जब सब कुछ उलट-पुलट जायगा तब स्वतंत्र होकर ही क्या करूँगा ? (आँधी का वेग। बख्शी जी चुप रहते हैं।)

चेत सिंह : आपको मालूम है, वारेन हेस्टिंग्स ने चुनार से दो हज़ार गोरी पल्टन बुलाई है, हम उसका सामना कैसे करेंगे ?

बख़्शी सदानन्द : मालूम है महाराज, पर वही तो कहता हूँ। उसका अवसर ही नहीं आयेगा। फिरंगी ऐसे हमला नहीं करेगा। और अगर हमला हुआ तो इस बीच महाराज सिन्धिया की फौज हमारी सहायता के लिए आ जायगी।

चेत सिंह : महाराज सिन्धिया की फ़ौज तो अब बहुत देर कर रही है बख़्शी जी। उसे तो कब का आ जाना चाहिए था। हाँ, बेनीराम पंडित के यहाँ का क्या समाचार है ?

बख़्शी सदानन्द : घर के विभीषण के कारण जो समाचार होते हैं, वही हैं महाराज। वारेन हेस्टिंग्स से वह समझौता कर रहा है। (व्यंग्य से) काशी का राज्य लेगा। छिः।

चेत सिंह : चेत सिंह की तलवार में अब भी धार है सदानन्द जी। अब भी वह फिरंगी दल पर बिजली की भाँति टूट पड़ना जानती है। आने दो फिरंगियों को, वह भी देखें हमारे प्राणों का खेल। हुँह, (व्यंग्य से) दिल्ली, लखनऊ, ढाका और मुर्शिदाबाद में पार पा गए फिरंगी। पर यह काशी है वारेन हेस्टिंग्स। यहाँ बाबा विश्वनाथ का साम्राज्य है। हमारी स्वाधीनता छीन लेना हँसी—खेल नहीं है।

बख़्शी सदानन्द : (गंभीर स्वरों में) कठोर होने के लिए क्षमा कीजिए महाराज, पर बचपन से आप के ज़िद्दी स्वभाव ने ही आपका अनिष्ट किया है। आप किसी की बात मान कर चलना नहीं जानते।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह : यह आप कह रहे हैं बख़्शी जी ! बाबू औसान सिंह के धोखे के बाद तो आपके हाथ में ही अपने को छोड़ दिया है। बोलिए, क्या करने को कहते हैं ?

बख़्शी सदानन्द : तो सुनिए महाराज, अभी कुबरा आता होगा। उससे बात चलाइये। यदि थोड़ा-बहुत रुपया लेकर फिरंगी मान जाय तो ठीक है। यदि नहीं मानता और आप को क़ैद ही करना चाहता है तो आप उसके हाथ नहीं पड़ेंगे। ऐसा मौक़ा आने पर वह खिड़की देख रहे हैं न ! उसी से आप को हम लोगों की पगड़ी के सहारे नीचे कूद जाना होगा। नीचे नाव बँधी है, आप तुरन्त उस पर सवार होकर राम-नगर चले जायँ। यहाँ हम लोग देख लेंगे।

[नेपथ्य में 'हर-हर महादेव' का घोष। मीर ग़ुलाम हुसेन आते हैं।]

ग़ुलाम हुसेन : महाराज, कुबरा तो आ गया पर रस्सी की तरह ऐंठा जा रहा है। बुलाऊँ ?

बख़्शी सदानन्द : बुला लीजिए मीर साहब, और हम लोग यहाँ से चलें। कुछ बातें भी करनी हैं। महाराज, उसे भेज कर हम जाते हैं। उसके जाने पर फिर आ जायँगे।

[मीर साहब और बख़्शी जी बाहर जाते हैं। नेपथ्य में स्वर "जाइये मौलवी साहब, महाराज अन्दर हैं।" कजली का पानों की तश्तरी लेकर प्रवेश, महाराज को पान देती है। चेत सिंह उसका सिर पकड़ कर हिला देते हैं, कहते हैं—"तेरा महाराज आज बहुत परेशान है कजली ! तू भी कुछ नहीं कर सकती ?"]

कजली : हुकुम होय महाराज ! का करीं ?

चेत सिंह : अरे, तू क्या करेगी ? अच्छा, उस ओर समने बैठी रह।

[पर्दा हटाकर, खाँस कर अलीउद्दीन कुबरा का प्रवेश]

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलीउद्दीन कुबरा : आदाब बजा लाता है यह ख़ादिम ! हुज़ूर ने याद फरमाया था सो यह बन्दा हाज़िर है ? क्या हुक्म है ? (दाढ़ी पर हाथ फेरता है ।)

चेत सिंह : बहुत विनीत मत बनो मौलवी साहब। तुम्हें एक ख़ास काम से बुलाया है । कर सकोगे ?

अलीउद्दीन कुबरा : हुक्म करें हुज़ूर ! बन्दा अपने इमकान भर हुज़ूर की ख़िदमत से बाज़ नहीं आयेगा। (दाढ़ी पर हाथ फेरता रहता है)

चेत सिंह : बात तो ख़ुश कर देने वाली कहते हो मौलवी साहब ! अच्छी बात है, सुनो । तुम अपने आक़ा हेस्टिंग्स से कहो कि वह अगर पचास लाख रुपए चाहते हैं तो मैं इस बार और कहीं से जुगाड़ करके दे दूँगा लेकिन इसे लेकर वह मेरी जान छोड़ दें । अब इन हड्डियों को चूसने से आगे एक बूँद ख़ून भी नहीं निकलेगा ।

अलीउद्दीन कुबरा : (दाढ़ी सुहलाते हुए) आपने तो बड़े पसोपेश में डाल दिया हुज़ूर । फिरंगी का पचास लाख लेकर मानना मुश्किल है । बात बहुत आगे बढ़ चुकी है । (क्षण भर रुक कर, जैसे कुछ निश्चय कर लिया हो) एक बात है महाराज, अगर आप एक करोड़ रुपये हेस्टिंग्स को दें, दस लाख के करीब दावतों में खर्च करें साहबों के, और पाँच लाख रेज़िडेण्ट मार्कहम साहब को दें तो बात चला सकता हूँ । और हाँ विजयगढ़, लतीफगढ़ और सतीशगढ़ के किले भी अगर अंग्रेजों को...........

चेत सिंह : (गरज कर) बस कुबरा, बस । अब एक लफ़्ज़ भी आगे मत कहना । चेत सिंह मरते दम तक यह नहीं कर सकता । यह क़िले चेत सिंह के पूर्वजों की यादगार हैं । ये क़िले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हैं, पुरखों की पुण्यस्मृतियाँ हैं। वह मर जायगा पर इनसे जुदा नहीं होगा। तुम जाओ मौलवी साहब, जो होना होगा, होगा। (पर्दे की ओर संकेत कर) जाओ।

[अलीउद्दीन कुबरा डर कर निकल जाता है। दूसरी ओर से मीर साहब और बख़्शी जी आते हैं।]

बख़्शी सदानन्द : सब सुन लिया है महाराज ? अब वही उपाय है जो आप को बताया था। मीर साहब को समझा दिया है।

[सुजान सिंह का भागते हुए प्रवेश]

सुजान सिंह : भैया, मार्कहम आ रहा है और साथ में कौन है, जानते हैं ? वही चेतराम, जिसे आपने नौकरी से अलग कर दिया था। वही नमकहराम चेतराम मार्कहम को रास्ता दिखा रहा है।

बख़्शी सदानन्द :
गुलाम हुसेन : } —(आश्चर्य से) चेतराम ! पुराना ख़वास !

[मनियार सिंह का प्रवेश]

मनियार सिंह : बख़्शी जी, यदि सिन्धिया की सेना जल्दी न आई तो ? क्या फिरंगी महाराज चेत सिंह को क़ैद कर, बनारस को लूट-पाट कर यों ही चला जायगा ? वह कैसा दृश्य होगा बख़्शी जी, जब हम अपने सामने ही अपने प्यारे सपने को मिटते देखेंगे। क्या इसीलिये मैं अपने स्वाभिमान का गला घोंट कर फिर वापस आया था ?

बख़्शी सदानन्द : (गंभीर कंठ से) आप विश्वास रखें बाबू मनियार सिंह, विदेशी बनिये महाराज के शरीर पर हाथ तक नहीं लगा सकेंगे। सदानन्द के प्राण रहते फिरंगी सौदागर काशी नरेश की छाया भी नहीं छू सकते। यदि भाग्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही रूठ गया है तो लाचारी है, पर काशी की जनता के एक लाख कंठ तब भी एक होकर महाराज चेत सिंह की जय बोलने को प्रस्तुत हैं। फिरंगी के आक्रमण का सारा उत्साह जनता के इस विजय-घोष के कोलाहल में कपूर की भाँति उड़ जायगा।

चेत सिंह : बाबू मनियार सिंह, चूहेदानी में फँसे चूहों की भाँति अब उछल-कूद मचाने से कोई लाभ नहीं। बख़्शी जी कहते हैं कि मैं मार्कहम के आने पर इस खिड़की से नीचे कूद कर रामनगर चला जाऊँ।

मनियार सिंह : क्यों बख़्शी जी, फिरंगी से डर कर इस तरह भाग जाने में महाराज के मुँह पर कालिख नहीं पुत जायगी ? बनारस को लुटने के लिए छोड़ कर वह रामनगर भाग जायँ ? यह तो बड़ी भारी कायरता होगी। विदेशी आकर घर लूटेंगे, इस डर से अपने हाथ से घर के दरवाज़े खोल दिये जायँ ? फिरंगी काशी की सुख-शांति में आग लगा-येगा, इस भय से चेत सिंह स्वयं काशी को उस ज्वाला में झोंक दें ?

चेत सिंह : (निश्चयात्मक स्वर) जाना ही होगा बाबू मनियार सिंह, और कोई उपाय नहीं है। बख़्शी जी ठीक कहते हैं। चेत सिंह के मुख पर अमावस्या की कालिख है जिसे जाह्नवी की सौ-सौ धारायें भी नहीं धो सकतीं।

मनियार सिंह : अब तो महाराज ने भी हार मान ली बख़्शी जी ! राम-नगर तो जाना ही है, पर एक बात पूछता हूँ। हमें इस तरह यहाँ से मुँह छिपा कर भगा देने में और शिवालय घाट के क़िले को फिरंगियों के लिए ख़ाली छोड़ देने में आपने क्या लाभ सोचा है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बख़्शी सदानन्द : लाभ ? लाभ केवल महाराज के प्राणों की रक्षा ! इस धरोहर की रक्षा करनी होगी।

मनियार सिंह : और इस धरोहर की रक्षा में हमारे मुँह पर जो गहरी स्याही पुत जायगी, वह कैसे धुलेगी बख़्शी जी ? इस कायरता............

बख़्शी सदानन्द : फिर वही कायरता ? महाराणा प्रताप जब पत्नी और पुत्र को लेकर कंदराओं में छिपे-छिपे फिर रहे थे, तब वह कायरता का प्रमाण था महाराज ? बलवान् शत्रु का सामना करने के लिए अपने पास शक्ति होनी चाहिये और शक्ति-संचय के लिए यह आवश्यक है कि शत्रु के हाथ हमें छू न सकें। इस समय महाराज का फिरंगी के हाथों गिरफ्तार होना उचित नहीं है। मैंने प्रबन्ध कर दिया है। महाराज सबको लेकर रामनगर जायँगे। यदि इसका अवसर न मिला और फिरंगी पहले ही आ गया तो............

[दूर पर एक गोला छूटता है। सब चौंक पड़ते हैं।]

चेत सिंह : बख़्शी जी लगता है फिरंगी पास आ पहुँचा। फाटकों पर पहरा मुस्तैद है न ?

बख़्शी सदानन्द : आने दीजिए महाराज !

[बाबू सुजान सिंह और मनियार सिंह एक ओर हटकर।]

सुजान सिंह : बाबू मनियार सिंह, महाराज अपने ग्यारह वर्षों के शासन में एक दिन भी चैन से नहीं बैठने पाये। उनके जन्म पर ही राज्य में षड्यन्त्रों की जो आँधी उठी उसने राज्य की जड़ें हिला दीं। अब फिरंगी के हाथों क़ैद होना बदा था।

मनियार सिंह : भाग्य की बात है बाबू साहब। मनियार सिंह के जीवन में भी अपमान और लांछन का इतना बड़ा अवसर कभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आया था। मनियार सिंह स्वयं राजा न बन कर इतना अपमानित नहीं हुआ था जितना अपनी तलवार को ज़ंग लगती देख कर हो रहा है।

चेत सिंह : क्षमा करें बाबू मनियार सिंह, मैं इस समय परिस्थितियों से विवश हो गया हूँ। सब दोष मेरा है। मैंने आपको व्यर्थ कष्ट दिया।

मनियार सिंह : महाराज, मैं फिर कहता हूँ, चेत सिंह मुझे वापस नहीं बुला सकते थे। मैं महाराज के लिए नहीं आया, काशी के लिए आया था। वही सपना नष्ट होते देखकर कष्ट होता है महाराज। पर अब तो बहुत देर हो गई। पछताने से क्या लाभ होगा ?

[दूर पर फिर गोलों के छूटने के स्वर]

चेत सिंह : कुछ लाभ नहीं होगा बाबू मनियार सिंह ! सुनते हैं यह गोलों की आवाज़।

सुजान सिंह : यह हमारे सिपाही हैं महाराज ! बाबू मनियार सिंह के दो सौ सिपाही नीचे फिरंगी के पचास सिपाहियों पर टूट पड़े हैं। प्राण रहते महाराज पर आँच नहीं आने दी जायगी।

मनियार सिंह : चलिए बाबू साहब, शायद नीचे हमारी ज़रूरत है। सिपाही आख़िर सिपाही हैं।

सुजान सिंह : भैया, हम नीचे ही हैं। आप विश्वास रखिये, महाराज की रक्षा में हमारे रक्त की अन्तिम बूँद तक बह जायगी। चलिये बाबू मनियार सिंह।

[दोनों जल्दी से निकल जाते हैं।]

चेत सिंह : अब सब कुछ आप के हाथ में छोड़ दिया है बख़्शी जी (**चौकी पर लेट जाते हैं।**) रानी जी ने जिस विद्रोह-भावना को फूँक मार कर सोते से जगाया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, उसे आप की मुठ्ठी में बन्दी बना दिया है। यदि दुर्भाग्य की कलंक-कहानी सुनते-सुनते ही सो जाना है तो वही हो। चेत सिंह विवश है। परिस्थितियों ने उसे काशी को, काशी की स्वतंत्रता को, जनता की स्वाधीनता के आनन्द को काल के कराल गाल में झोंक देने पर बाध्य किया है। चेत सिंह मर गया बख़्शी जी, उसका शव डोल रहा है।

बख़्शी सदानन्द : परिस्थितियों पर विजय पाना ही वीरता है महाराज। आप रामनगर चलें। फिर मैं वहीं आकर मिलूँगा। मार्कहम के सिपाही कुछ बिगाड़ नहीं सकते। उनके पास केवल बन्दूकें हैं, कारतूसें मैंने ग़ायब करवा दी हैं। वह अपना सा मुँह लेकर रह जायगा।

[बाहर कोलाहल बढ़ता है। रह रह कर 'महाराज चेत सिंह की जय' का घोष होता है। कभी 'हुकुम कम्पनी बहादुर का' के स्वर भी सुन पड़ते हैं। बख़्शी जी और चेत सिंह चौंक कर देखते हैं। तभी पर्दा हटा कर मार्कहम और चेतराम आते हैं। चेतराम को देखकर कजली तश्तरी रखकर बसावन को बुलाने भागती है।]

मार्कहम : (अकड़ के साथ) बेल, हम गवर्नर जनरल शाहब के हुकुम से तुम्हारे पास आया है चेट।

चेत सिंह : (बात काटकर) ज़ुबान सँभाल कर बात करो मार्कहम साहब! तुम काशी नरेश से बात कर रहे हो, अपने ख़ानसामा से नहीं। हाँ, तुम्हारे गवर्नर जनरल का क्या हुक्म है?

मार्कहम : तुम गरम होने नेई माँगटा। हम गवर्नर जनरल शाहब का हुकुम पढ़ कर शुनाता है। (काग़ज़ निकाल कर पढ़ता है।) टुमने कम्पनी बहादुर की हुकुम उड़ूली की है। फ़ांशीशी······

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह : रहने दीजिये साहब, पढ़ कर सुनाने की ज़रूरत नहीं है। चेत सिंह को अपने दुर्बलता की कलंक कहानी बार-बार नहीं सुननी है। लेकिन तुम लोगों की स्पर्द्धा खूब बढ़ती जा रही है साहब ! अभी कल नाक रगड़ कर गिड़गिड़ाते हुए व्यापार करने की भीख माँगने आये थे, आज तुम्हारा हुक्म भी चलने लगा। भविष्य की ओर से अन्धे मुग़ल सम्राट शाह-आलम ने लुटेरे क्लाइव को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी सौंपने के पहले अगर अपने कान भी बहरे कर लिये होते तो आज यह दिन न देखना पड़ता।

मार्कहम : एई, हम यह शब बकवाश नेई शुनने माँगटा। गवर्नर जेनरल शाहब टुम को पचाश लाख रूपया जुर्माना करना माँगटा है। टुम डेना माँगटा है ? और क़िला देना माँगटा है ? हम कई बार बोला······

[नेपथ्य से 'हर-हर महादेव' का उल्लसित घोष।]

चेत सिंह : यह सब बकवास है मार्कहम ? हाँ तुम्हें तो यह सब बकवास ही लगेगा ! पर यह तो बताओ साहब, जब फ्रांसीसी फौजों से तुम्हारी कम्पनी ने लड़ाई छेड़ी थी तब हम से पूछा था ? हमसे राय ली थी उस दिन ? नहीं न ? तब वह लड़ाई चलाने के लिये हमसे रुपये क्यों माँगते हो ? तुम्हारा बंगाल का ख़ज़ाना खाली हो गया तो हम क्या करें ?

मार्कहम : टुम कम्पनी बहादुर का मरजी शे बनारश पर राज करटा है। टुमसे कम्पनी शरकार राय नेई माँगने शकटी। टुमारा काम है हमारा हुकुम मानना।

चेत सिंह : हाँ, राय क्यों लोगे ? डाकू जब लूटने आता है तब घर के मालिक से पूछ कर नहीं लूटता। सच बात तो यह है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब कि काशी का राज्य तुम्हारी कम्पनी के लिए ख़तरा है। तुम लोग जिसे स्वतंत्रता से साँस लेते देखोगे उसे गला घोंट कर मार डालना चाहोगे। दूसरां की स्वतंत्रता की समाधि पर ही तो तुम्हारे लूट के भवन की नींव पड़ेगी। काशी तो सोने की चिड़िया है न ! भारत देश तो कामधेनु है न ! तो दुहो जी भर !

मार्कहम : टुम पचाश लाख जुर्माना डेटा है महाराज ? और शब क़िल्ला......

चेत सिंह : पचास पाई तो अब चेत सिंह से पा नहीं सकते मार्कहम ! जाकर कह दो अपने गवर्नर जेनरल से कि महाराज चेत सिंह रुपयों के बदले गोलियों से उसका ख़ज़ाना भरेंगें। जुर्माना करेंगे ! फिरंगी जुर्माना करेंगे महाराज चेत सिंह पर ! शिः! **(खिड़की के पास जाते हैं, बाहर झाँक कर आश्वस्त होकर)** अफ़सोस है साहब, तुम इस समय एकदम निहत्थे हो, नहीं तो महाराज चेत सिंह का अपमान करने का परिणाम देख लेते। चेत सिंह अकेला तुम्हारें लिये काफ़ी था। **(रुक कर)** क्षत्री निहत्थों पर कभी वार नहीं करते मार्कहम, हमारी यही रीति है।

मार्कहम : टो हम टुमको गिरफ्तार करना माँगटा है महाराज चेत सिंह ...चेटराम, हम गवर्नर जनरल शाहब के पास बोलने जाटा है कि चेट सिंह मानने नेई शकटा। टुम हियाँ पहरा डेगा। हमारा शिपाही लोग बाहर है। टुम हमरा आने टक......

[मीर गुलाम हुसन और बख़्शी सदानन्द अपनी-अपनी पगड़ी उतारते हैं और एक में बाँधते हैं। तब तक मार्कहम बाहर निकल जाता है। चेतराम डट कर पहरा देने की मुद्रा में खड़ा होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेत सिंह पगड़ी बँध चुकने पर इधर देखते हैं, फिर उसका एक सिरा हाथ में ले लेते हैं। चेतराम कुछ समझता नहीं। खड़ा मूँछों पर ताव दे रहा है। तभी एक ओर से बसावन और कजली आकर खड़े हो जाते हैं।]

बख़्शी जी : (चेतराम के पास जाकर) चेतराम, तुमने महाराज का नमक खाया है।

चेतराम : हाँ हाँ, खाया है। जब खाया था तब खाया था, आज कम्पनी बहादुर का नमक खा रहा हूँ। अगर तुम लोगों में से किसी ने कोई शरारत की तो अच्छा न होगा। बाहर हमारे सिपाही तैनात हैं। तुम सब लोग कैद हो, मीर साहब, तुम, महाराज सब। अगर कम्पनी बहादुर के एक सिपाही से भी किसी ने बदतमीजी की तो तुमको और घर की औरतों तक को बाँध कर घसीटा जायगा।

चेत सिंह : (चीख़ कर) चुप बेहया, जानता है किसके सामने बात कर रहा है ?

चेतराम : हाँ, हाँ, जानता हूँ। चेत सिंह के आगे बोल रहा हूँ, जो अब महाराज नहीं, कैदी है। अभी मार्कहम साहब आते होंगे, बाँध कर ले जायँगे।

[नेपथ्य में 'हर-हर महादेव' का उग्र घोष कई बार होता है। तीव्र पृष्ठ सङ्गीत।]

चेतराम : हैं, यह क्या हो रहा है ? यह कैसा शोर है ? (बाहर जाता है।)

बख़्शी सदानन्द : (ज़ोर से) महाराज, यही समय है। मनिग्रार सिंह के सिपाहियों में और कम्पनी के सिपाहियों में ठन गई है। आप कूद जायँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[चेत सिंह कूद कर खिड़की के पास पहुँचते हैं। बाहर शोर बढ़ता जाता है।]

चेत सिंह : (बीच की खिड़की के सामने खड़े होकर गम्भीर स्वरों में) नियति का खेल कितना निष्ठुर है प्रभो ! क्या भारत का भाग्य सदा के लिए सोने जा रहा है ? पश्चिम की यह आँधी क्या सब कुछ अपने वेग में बहा ले जायगी। पर चेत सिंह परिस्थितियों से विवश है भगवन् !

[खिड़की में एक सजीव मूर्त्ति, स्वर आते हैं—]

मूर्त्ति : तुम्हारी हार भारत के भावी विजय की मंगल-घोषणा है। आज की हार में कल की आशा छिपी हुई है। जनता एक दिन जागेगी और भारत विदेशी परतंत्रता से मुक्त होगा।

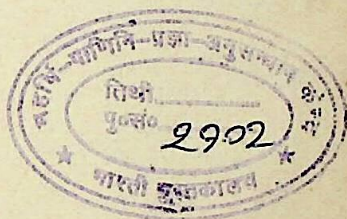
(चेत राम आता है। चेत सिंह को कूदते देखकर उधर बढ़ता है।)

चेत सिंह : चेत सिंह अँग्रेजों के हाथ नहीं लगेगा चेतराम ! मार्कहम से कह देना कि अँग्रेज़ों की सर्वग्रासी भूख न जाने कितने चेत सिंह का बलिदान लेकर शान्त होगी। मैं चला बख़्शी जी। मीर साहब, जाता हूँ।

(कूद जाते हैं। पर्दा मिलता है।)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख



अपने उथल-पुथलकारी
सर्वदानन्द साहित्य के इतिहास
सुरक्षित कर चुके हैं। कभी क
लिखीं, अनुवाद किये, निबन्
किया, आकाशवाणी के लिए
आज रङ्ग-मंच की सेवा के
तत्पर हैं। स्वयं एक अच्छे
नाटक में उनका रंगमंच का ज्ञान बोलता है। अब
पुस्तकों के प्रणयन के बाद भी उनकी लेखनी रुकी
है यद्यपि गति में भिन्नता है और माध्यम केवल गद्य

पुस्तक परिचय

चेतसिंह भारतीय इतिहास के दुर्बल पृष्ठ पर अंकित व्यक्तित्व की कथा है जिसके कारण भारत में यदि अँग्रेजी राज्य को आमन्त्रण नहीं मिला तो कम से कम उसकी जड़ जमने में सहायता अवश्य मिली! नाटक के छोटे कलेवर में सब कुछ समा पाना तो संभव नहीं पर तत्कालीन वातावरण, परिस्थितियाँ और पात्रों का मनोभाव इसमें उभर कर अपना परिचय देते हैं। हिन्दी साहित्य में अभिनय योग्य नाटकों के अभाव को दूर करने की दिशा में चेतसिंह एक सक्रिय और सबल कदम है।

मूल्य ३) रुपया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.